

Condamato-
88
Rosau TANTRA

आशुभ शरद्वर्ष

2745

I

ASHA ARCHIVES



88

I

2745

Handwritten text in a box, possibly a library or collection identifier.

क. नं

ओं नमो श्री चंद्र महा नाथ
मकलिन मय हगवान
कायवा कुचि रुदय व
मन के श्रवण या मिगल
वज्र जा मिनां ॥ पीना च न
च न न च वज्र या मिनां ॥
गिनी नां ॥ श्री हव ऊ स च व



साय ॥ ॥ एवं मया श्री न
श्री च ऊ स च सर्व मथा गन
धर्म धनी हग विऊ हान
नयथा ॥ ॥ धेना च न स च
स च वज्र या मिनां ॥ नका
श्रमा चल न च वज्र या
ऊ जा मिना ॥ पिउ न व ऊ

स च वज्र जा मिना ॥ नाग व ऊ स च वज्र जा मिना ॥ शूर्या व ऊ स च वज्र या गिनी नां ॥ ॥
उवं प्रमुखे यांग या गिनी का टिनी मुट ग म सह सु ॥ अथ हगवान व ऊ स च रुद्रा चल स
मा धि समा पय न मुडा ऊ हान हा वा हा व विनि मुर्कि श्रु नान न दे क न त्य न र्थे निष्ठा
पंच स नृ शा हं सर्व सं कल व र्जि ना ॥ मान जान कि थ मुडा स च पूर्व ग धि छि न ॥ नृणां
महं हि ना र्थ य पंचा का न स सै छि न ॥ अथ हगवनी व ऊ धर्म धनी हव व जी समा धि
समा पय न मुडा ऊ हान गु न्य ना क नृ ना ही ना दिव का म स र्व हि ना स च कल वि ही ना
ह निष्ठा पंच नि ना कल ॥ मान जान कि थ नार्थ स च श्री द ह सै छि ना न् ॥ नासा मह हि ना

क. न

थयपंचाकाने संलिङ्गा ॥ अथ हगवानरुक्माचलो गठुलहगवकी दधवकी च
मयित्वा समालिङ्ग चामकुय न सं ॥ इति दवी महानमं न हस्यं चामि उर्ध्वं ॥ आना
मा च न न (ग्रहं सर्ववृद्धे सुहायिनी ॥ शुभं वरुण महागुरुं न कुना ऊर्ध्वं न पं ॥ वामादे
क न वी न कुसुखाना मा सुसिद्धये ॥ अथ का गंधप मिदं मं ग्रं अष्टम मधुलग्धि ॥ नाम
मधुल प्रविष्टस्य न कुना ऊर्ध्वं गयि ॥ गुना ह क कृपाल् (धाम कुयाम यत्राय स ह क
सा सु श्रवन्निर्गन्तं मं ग्रं प्रदगयि ॥ उव वृद्धा उय कथि यागी लाह विदग्धि ॥ च
न स मधुला दृष्टदगय न कु म कु कं स महा व्याधि हि ग्रहा विष्टा मृग मली कृग ॥ यथा

३

सात्यक न न स मृग ३४ ख ह विष्णु नि ॥ यम दग्धि क ग य ल काल पाग व ग कृग ॥ न न कं नि
य ग पापि यदि वृद्धे न पि न कु ॥ यदि कर्म स या उ ४ ख कुत्का उ न कु व म म ॥ मा नृष्य प्रा
प न कु न न ग व ऊ न हि य न ॥ न सा सं उ लं चानु व र्ध य म ग वि दग्धि ॥ प्र व र्ण न ग व गि व्या
न पूर्व भ न प नि कि ना न ॥ न मा हि द ग य न कु वि श्र ला क श्र इ श्व र ॥ अथ नंद ग य या पि (
श पि ग च्छ स (ध ग धि ॥ सुख पा को ह व न स यदि वृद्ध स म्य पि हि ॥ य द्वा ही ना ३ थ वा गि
षा शुभं न कु हा स ना य च ॥ हि य न मृद व ऊ श वृष्टि काल न स ग य ४ ॥ न थ ग न म या द वि
ला पि नं व व ना न न ॥ न य द्दे क न वी न स्त्री स शुकं च शुभा वती ॥ ॥ ॥ अथ क न वी न स्त्री

श्रीचन्द्रमहानाथसमस्तकुंजकावगानसपटलप्रथमसर्गः ॥ १ ॥ अथ हगवमीदृशवकी
 हगवकचन्द्रमहानाथसमस्तकुंजमालिङ्गम् ॥ मंडलस्य हि किं यत्मानं वर्द्धय च कनहिलि
 खितव्यं च नथानेयं मध्यमं किं कुरुहि मप्रह ॥ अथ हगवानाह ॥ मंडलस्य ह नत्मानं च कुरुहि
 हलकैः प्रहस्यैवाचतुर्थपंचपंचमाननचाधिकं ॥ यस्यानस्यैव चतुननानावर्द्धक्यनच ॥ च
 तुरथैव चतुर्द्वानैव चतुस्तानमहृषिगौ ॥ हगवमचाहृष्यनेव दाननस्य प्रकल्पयेत् ॥ दानमा
 नननिर्गृहं नददं न कपालकं ॥ पञ्चापि नथावदिहानाईहानपटिकां ॥ मूलस्यैव हि क
 स्थाप्य दनेव नजातुर्वी ॥ वजावलीच ननेवाहृष्यनगोक्तुश्च कल्पयेत् ॥ दानैः प्रियुगिर्नैक

र्णान्नानस्तानसमस्तुर्मविश्ववज्रमध्यलिखित्वा वज्रपाकानवष्टितकल्पवृक्षादिति य
 कंचतुनाथसमंडल ॥ पृष्ठमकंचतुर्द्ध्वैव चक्रवत्यनिर्मंडली ॥ नस्य पूर्वादिकं विश्वपद्मम
 श्लोसमालिखत् ॥ नवम्यमध्यमं नमधरवर्गसुनीलकं ॥ वज्रमकिं नमश्च वज्रकर्षिकपा
 लमुक्ते ॥ पूर्वचक्रां किं नखज्जयं नवर्द्धसमालिखत् ॥ दक्षिणपीठवर्द्धकुशुभं नलनसंलि
 खत् ॥ पश्चिमनकवर्द्धतुनकपद्मं नचिचिकी ॥ उरुनखवर्गमागकुस्यामवर्द्धकुसमालिख
 त् ॥ चक्रमचिचिकां किं नमिचिका ॥ लिंगिनां लिखत् ॥ नैऋत्यपीठवर्द्धकुलिखत् नलसुचि
 क्रिगां ॥ वायव्यचक्रथानकपद्मसुचिकिगा ॥ उग्रमध्यमवर्द्धकुनीलासुलसमचिगा

क. गी

चन्द्रसूर्यापनिस्तु सर्वचिह्नं प्रकल्पयन् ॥ नजीमं उलमिदं प्राकं मया लाकार्यसाधने ॥ अथ
वामं उलं कुर्यात्पुनश्च मूलं लिखन् ॥ पूर्ववत् उलं लिख्य मध्यं कृत्वा चलं लिखन् ॥ तं प्र
नक्षत्रं वक्रावर्त्तयेत् ॥ अथ पीमा चलं सव्यं पृष्ठं नका चलं लिखन् ॥ लिङ्गं
अग्न्यामा चलं वक्रं माहवजि ॥ अथ पीमा पीलु नवजी समालिखन् ॥ वायुं च लाहिका
दवीनागवजी समालिखन् ॥ इन्द्रं नक्षत्रं वजीमा लिखन् ॥ वेपथुं मोउली ॥ अथ मं उ
ला विष्टानमकुं हवनि ॥ अं श्रीचतुमहामाषसर्ववनिवा नसहिममागच्छ २ ऊहो वही
अथ मं उल अविष्टानं कुर २ ऊहूँ स्वाहा ॥ अनना कुरव प्रवर्गवक्रावगी कुर प्रजयन्

अथ प्रजामकुं हवनि ॥ अं कृत्वा चल प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं अग्न्यामा चल प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥
अं पीमा चल प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं नका चल प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं अग्न्यामा चल प्रथमं प्र
गच्छ ऊहूँ ॥ अं नक्षत्रं वजी प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं माहवजी प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं पीलु
नवजी प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं नागवजी प्रथमं प्रगच्छ ऊहूँ ॥ अं इन्द्रं वजी प्रथमं प्रगच्छ
ऊहूँ ॥ प्रणमनं तथा धूपं गंधं नेवमवच प्रजापंचा प्रहानं कुर्याद्वै मं उल स्पृष्ट्वा
दा अग्न्यामा चल मध्यं माहवक्रा समन्विता ॥ नसेव मं उलं हयं उर्वपीमा चलादिकी ॥ पंचयमि
प्रहृदं न पंच मं उल कल्पनी ॥ कुर्यादिकाग्रचिह्नं न पूर्वं सवाकुरु मथ मं उलं पनिवक्ष्ये

॥ क. न. ॥

नयागिनीयागसंज्ञाहाऊयन्मध्यमा(ले)श्ववर्ज्यश्चमूर्ध्वर्ध्वः॥॥ॐ॥निकनवीनारथश
चैतमहानाषमनकुर्मेउलयकुलादिनीय॥२॥मृथहृगवमीमाह॥कथंगिष्ठाहवह
आयाजिनयाउनकुर्क॥निर्विसकथकईवकथयस्वमहाप्रहा॥मृथहृगवानाह॥
आदोडीगनसंदयापंचगिष्ठाशपाषध॥ननयंचाहीधकंबुगुष्कप्रहांकुलीषन॥न
वाह्याहवचिष्यनकुर्नस्येवदगयन्॥इनकावर्ज्येदस्यमस्यथागोनवेवर्ज्य॥न
कुयंविगनसंगमथबुद्धगच्छामिगननेयावदावाधिमंतल॥धर्मगच्छामिगननेग
द्यचाप्यस्यश्रद्धया॥नययेपंचगिष्ठागमथामाननेचोनिकांचापियनपत्नीमृषावच

॥ ॐ ॥

सूजामिसूर्यवत्सर्वेपंचमंमयमवच॥नययेपाषधगमथ॥नसर्वेद्यानयिष्यामिनहनिष्य
पनसकं॥वृक्षचर्यचत्रिष्यामिवर्ज्यीष्यमृखावच॥प्रपादायत्नमंमयंनपममिकदा
चन॥वृक्षगीनवित्वाचवर्ज्यिष्यामिसात्तना॥उच्चगर्णमहागर्णाविकालपिचहाऊ
नेथउषयाषप्रधर्मस्यगमहंतामत्रुगिष्यया॥विशुद्धंक्षत्रयिष्यामियथावृद्धनदगिर्न
ननजिह्वागनंमानप्राप्यबुद्धस्वबुद्धमे॥हवयंहवस्विन्नानागननसर्वदहिनां॥सना
मिहवयावकावकसुगमयप्रमान॥हवयंसाधुससगंधीमाननाकहिर्ननन॥नंशी
यंमदकाहिष्यकगिष्यश्रद्धहृदिकर्गकागौनिर्मलथात्वाविजयकननाउदकमारुष्य

क. न

सहकालपल्लवसः॥ॐ आसर्वभगमाहीधकसमयशायकं॥ॐ नमो नालिषिचयन्॥ न
उमकूटाहिषकटवक्रादिघटिनमकूटसर्वसुखमिमाकलम्यगिष्यचक्रवर्त्तनविबद्ध
लाहन्तिनसिमकूटदत्तापूर्ववदलिषिचन॥ॐ चन्द्रमहाभाषलआवग२भूसादयकूट
द्रुगशायखगहिषक॥लाहादिमयंखगस्यदक्षिणहस्तदत्तापूर्ववगलिषिचन॥ॐ ह
नहनमानय२सर्वनंशाहानखनकूटद्रु॥नशायपागहिषकननाआदिमयंपागम
सगर्जनीपूठवामहस्तदत्तापूर्ववगलिषिचन॥ॐ गृह२कह२सर्वइष्टानपागनबंध
वन्धमहसुखनधर्मकस्वाहा॥नमो नालिषक॥गिष्यचक्रमहाभाषलमुद्रयापविर्ग

ॐ

नराकाभयवगमानंवा॥ॐ हृष्टाहगवन्कूटप्राचलसिद्धिर्लंकूटद्रु॥नमपूर्ववगलि
षिचन॥ॐ वंसाधकसकूटप्रादिवर्त्तहृदनपंचाचलनामाहिषकादय॥ॐ नमिपंचा
हीधक॥नमस्तुतीमकुमकूटाहीधकसुक्तासिन्नुनाहिषकंदयाग॥पटमहादेवीश्रुपिमी
भाषामानवउं हृगवगीआवग२भूसाहृदयकूटद्रु॥लाहादिकर्तृकादस्यादक्षिणहस्तद
याग॥ॐ कर्तृकसर्वमानाभंमासकर्तृय२कूटद्रु॥वामहस्तनकपालंदवादिहृगंवाद
याग॥ॐ वज्रकपालसर्वगकभंनकंधानकूटद्रु॥नमोहृगवगीमुद्रयापविर्गनकान
सचालव॥ॐ हृष्टाहववगीसिद्धिर्लंकूटद्रु॥ॐ वंशियकूटप्रादिवर्त्तहृदनपंचयगिनी

क. नं

नामाहिषिचन॥ आसां उपहाहिषकास्तानउपायाहीषकादयश्च॥ अथउकाहिषका
हवमि॥ गोष्ठाग्रुवकुदिहि सं प्रकृमलैस्वमनावांछितां उपजीह नमंति नानिर्णय
नूँ मंनियीकिनिमु सै सर्वकामसुखप्रदा॥ मयाकामसुखार्थकं शुक्रनाथकृपाकृ
ननोपुनमस्तुस्यगिष्ठावहिमिगच्छेत्सुदृढमसुन॥ उंचत्रमहानाथमकुरु॥ विम
क्रुपमिनिष्टन॥ पुनः पुनमासादिहिनात्मानं प्रयत्नया प्रहाश्रुतकर्मसंप्रतिह्य
नउहृन्नुकृणोमिनीपक्षप्रदावचस्तुव्यगिष्ठाश्रुयनस्यजिकाचामनामिकागुष्टा
सीद्वीष्टहीत्वाकुरुकाललिखन्॥ नमोमहासुखमिमिनिपाश्रयचातप्रउववदगाश्रुया

हेनृद्रुहानसमुपादयामि यमागिनागनप्रसूतान्नावृद्धाहगवनाः प्रमिष्टिमानिर्वीमपाफा
किंतुनत्वयदंभृदृष्टमधलसपुननोवकर्वीमथवदसि नदानस्यगिष्ठासुहृदयवर्गसमापयि
लेदपथन्॥ अमिनिष्ठास्यैवर्गश्चन्द्रनाथमकनहिन॥ सुदयनसमयंयुक्तस्यकुंदननस्य
नऊमकाटिहृत्पुष्टवर्गव्ययकनानना॥ सर्वांगीकुंदकलोगिगीनकुंदकनसना॥ हविष्य
किनवाप्यवंममयंयदिहस्तसि॥ ननः गिष्ठाभवकव्यमवमसिनि॥ ननोश्रुधपमंवंधयि
त्वामधुलपुष्पदापयन्॥ ननोश्रुधपमंशुक्रामंउलंदगंयिन्॥ नस्यचिक्कंनशाधयन्॥ न
नकामवप्रहागिष्ठासुसमर्पयन्॥ रूयंनक्षत्रशीनासुवावृद्धप्रकाशिता॥ अमिनामकि

क. नं

शामूठरसिद्धिस्तनचातुमः॥ गंगाशुभकथयच्चतुना नन्दविलागं॥ गंगावहनिर्गच्छ
नशुभप्रहातुनमीहयाकडकनगुक्तनर्जनादगयकि॥ किलमूलहभुवत्समदियसचिह
ऊमं॥ विभुयंचनकंचहगवशाकप्रचुषभा॥ सधकेनवकव्य॥ किंचाहनात्सहमाकरी
यात्सचिहऊमं॥ कार्याहकिमयाश्रीभायावदावाधिमउद॥ साचाहा॥ अहामदीयपमंसर्व
होखसमन्विनं॥ सुवयशाविधाननगनसाहंसिद्धिदायिनि॥ कुरुपपन्नयथकार्यत्वेय
धैर्यप्रयागन॥ स्वयंचन्दमहाभाषमहिभायनमहासुख॥ नमसाधकआत्मानेचतम
हनाषमध्यात्वापह्णवद्वषवजीरूपमसंप्रदंरुत्वाचतुना नन्दानजयशु॥ गंगान्विष्यन

रुं

पुत्रपुत्रंरुत्वामासादिहिगमचक्रंरुर्थागु॥ निपह्लाहीषक॥ ॥ रूयकनवीनाख्य
शोचन्नमहाभाषनगकुम्ह्रिषकपटलरुनीय॥ ३॥ अथहगवमीमाह॥ एविगव्येकथ
चंडनाषभाएवकनहिऊफवकीटर्गमदवदत्वपनमधुन॥ अथहगवानाहा॥ मनानुरु
लनदगोसर्वापडववर्जिनशास्त्रैकसयगप्रयथालवसुमाहिग॥ गंगाहदीहावयदी
ऊपमचन्नविहिके॥ नस्मिहिपुनगाध्यानिष्यनचन्नशोषमपुत्रयत्ननसाग॥ ३॥ पुष
धुपादिहिबुध॥ नदएदगयत्तापंसर्वप्रथप्रभादयशु॥ दिगनगमनेरुयथावनाथ
षममपि॥ आत्मानश्च॥ गंगादत्वाप्रम्वचपनिनामयशु॥ पतिधानंनगकृत्वा॥ धेचिद्रु

कं

[illegible]

9

महासहस्रं प्रष्टुं संकमनं यथा गि-उतस्य मृद्विविलचनं गानां संकाकियागं नमामकिहगवे
नसा ॥ नमः शुक्रं नस्तीह नपदं कृत्वा हं गमय न ॥ निष्पन्नं नृपकुनिगनचहं गमय न ॥
हन्ता नखं नचाकात्योपिन नपगभा नृहं कथय ॥ मा मखापी न नृहं कथय ॥ हं किं नृपकल्प
य ॥ न गमहि मा मकी शृङ्गमा न न संप्रकाशय ॥ या वालिगि नृधया नृहं कथय ॥ नृपकल्प
खर्ग मंगक न सच वामपागं सुमन्त्रि नृहं ॥ नृहं नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥
नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥
नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥ नृहं कथय नृहं कथय ॥

क. १

नहविनः दिनसुवर्षाकाले उ नकचक्रद्वयविउलावयहिनचिद्रमसिद्धोहं चै उना
षण् ॥ गनाममयच्छानना (ग न पु वा र्थे) गा चल शृङ्ग ॥ माहवजी शृङ्ग द (ग्ये) नलं कान
समपहं ॥ पीगा चल शृङ्ग रुवपिधुनवजिकु ने चक्र ॥ पीगा नका चल शृङ्ग दृष्ट नका
चलं नागवजिका वाश्व चो रु नग्धमा चल गधमा मीमन क ॥ र्वावजी शृङ्ग ॥ पश्च
त्तप्रहा क्रमिभान ह ॥ चोदयमि ॥ कनीदव्यासक ॥ क्षदी गमीमिनी ॥ वरुमेशी उवर्जि
श्रहाहिमा मुनसंहा चगा मविडा नहि कमि सर्वज गदिमा हवमाह वजा मा क नृक्ष
चिद्रमच्छा गहिय रु माहाहि सं सून ॥ माभा मृद ह इवि श्रहा ॥ ह ॥ जीववि इ न्वपि उ

१०

नवका ॥ कीसुहनि सविहा हि मृ सून हि कनसियवसमा ॥ अनिमकन कनि मनि मृ च ॥
ला मृ सय नागवका ॥ याचन मकि मृ पवि मृ नि लु ल सून उहि ॥ सून सह ववि (गा) ॥ मृ क
न ४ ही उभा उ स मदि ॥ र्वावका ॥ स्वप्ने व ॥ दं क्त्वा उव्या क पूटि मी उहि म ॥ पूर्व के ने व नृ
पम ध्याया रु संप ना ल कं ॥ गन र्थे गा चल हत्वा माह वजी प्रका गय ॥ नृ प र्थे गा चल ह
त्वा पुन ४ पीगा चल ह ने गा कामय ॥ पी उ न वजी रु क्त्वा पि गा चला म कं ॥ हत्वा न का च
ला ग ४ का मय डा ग वजि की ॥ रुत्वा न का चला त्या न ह न्या गध मा चल पुनः ॥ र्वावजी क
न ४ काम्य रुत्वा गध मा चला ल कं ॥ मृ नृ ना र्थे च उ र्वा वि संह न ल व मं उ ल ॥ र्वा प्रट चै क सा

क. नं

लानेन वयनिह नयनं ॥ अहं कानन नकुवाहि द्वाहं नेव सं गय ॥ कृष्णवर्ण हिया यागी स कृष्ण
प्राचल लवक ॥ २५० ॥ गोभाहिया यागी स ॥ २५१ ॥ प्राचल लवक ॥ पीनवर्ण हिया यागी स ॥ २५२ ॥
चल लवक ॥ नकवर्ण हिया यागी स ॥ २५३ ॥ प्राचल लवक ॥ गणमवर्ण हिया यागी स ॥ २५४ ॥ प्राचल
लवक ॥ कृष्णवर्ण उयाना नीद पवडी विला वयन् ॥ २५५ ॥ गोभा उयाना नीभाह वडी वि
ला वयन् ॥ पीनवर्ण उयाना नीद पवडी विला वयन् ॥ २५६ ॥ नक गोभा उयाना नीभाह वडी वि
ला वयन् ॥ गणमवर्ण उयाना नीद पवडी विला वयन् ॥ २५७ ॥ वज्रचगिनी नन सर्वाना नी उ
वज्रयामि ॥ कृष्णादि वर्ण हृदन सर्वमनस्य कल्पयन् ॥ २५८ ॥ मृधवाम कल्पदन पंच हृदन प्र

११

कल्पकं ॥ कृष्णादि हिमानसं कृष्ण ॥ २५९ ॥ गोभा कल्पका वपि पन कृष्ण ॥ २६० ॥ कृष्ण कल्पका वपि पन
गणम उच्चाटन लवका यद्वा जाति प्रत्यक्ष ॥ २६१ ॥ कृष्ण कल्पका वपि पन ॥ २६२ ॥ कृष्ण कल्पका वपि पन
कल्पका उगम कल्पका उगम कल्पका ॥ २६३ ॥ यामा मय वाष्टु कल्पका वपि पन ॥ २६४ ॥ कल्पका वपि पन
यामा मय वाष्टु कल्पका वपि पन ॥ २६५ ॥ कल्पका वपि पन ॥ २६६ ॥ कल्पका वपि पन
यां सर्वमान हं न ॥ २६७ ॥ यावदि कल्पि हं न ॥ २६८ ॥ यावदि कल्पि हं न ॥ २६९ ॥ यावदि कल्पि हं न
दि स प हं न ॥ २७० ॥ न कल्पका वपि पन ॥ २७१ ॥ न कल्पका वपि पन ॥ २७२ ॥ न कल्पका वपि पन
सं सर्ववृद्धे प्रहृतिनी ॥ २७३ ॥ न कल्पका वपि पन ॥ २७४ ॥ न कल्पका वपि पन ॥ २७५ ॥ न कल्पका वपि पन

क. ७

चतुर्थः ४ ॥ अथ मर्त्येष्ववकाशित्वमकुतसुचयः अथ हगवान्सर्वमानपनाकुयं
नामसमाधिसमापयदेमकुसुमचयमाह ॥ उंचदमहानावमकेरुह ॥ मूलमकु ॥
अचलकैकादिमीयामूलमंय ॥ उंचरुह ॥ दूमीयामूलमंय ॥ कं हृदयमकु हां रुम
मंशदिमीयं हं ॥ दूमीयाहृदयमकु ॥ उंचांकांकांचधुन्यचद ॥ उंचद ॥ कं हृदयमकु
१२ ॥ पल्लवय २ ॥ हन २ ॥ यत् २ ॥ बन्ध २ ॥ ऊरुय २ ॥ लोचन २ ॥ नाहय २ ॥ सुविगकसंमुखमंय
नेरु २ ॥ सर्वजकिनीनांयहृदयमकु ॥ नपिमानव्यासिचकातीकागीम २ ॥ मन २ ॥ मान २ ॥ नूर
चंउ २ ॥ मांचंउमहासनसर्वमाहापयति ॥ उंचधुमहासनमकेरुह ॥ माहमंय

११

उंचमसर्वालापनिप्रनकस्यसर्वनथगनस्यसर्वथामचलकागनट २ ॥ माह २ ॥ सद २ ॥ गिह
मावग २ ॥ आमहामकुवाल्कधुनूर ॥ निन २ ॥ खाद २ ॥ विद्यानमान २ ॥ इष्टानहृद २ ॥ सर्वाकु
नूरकिनि २ ॥ महापीथामवऊरुहृद ३ ॥ पिचनिननगानुडककैमचलमेवहृद ॥ हृद
य २ ॥ ऊंचमसमकिकशाटमहावलसाटयसमानय ॥ ओं ॥ हागवपुलाकडुषुवकीन
माकुप्रकिहनचलस्यहालयशानमसहनमहाहा ॥ दिमीयामालामंय ॥ नमसर्वा
पनिप्रनकस्यसर्वनथगनस्यसर्वथानममायचदमहानीषमहाटय २ ॥ ईशाम
य २ ॥ उंचहामा ॥ दूमीयामालामंय ॥ निधंवाचनसामान्यमंय ॥ विगधमकुकु ॥ उंच

क. ४

रुद्राचलरुद्रं ॥ ॐ ऐमाचलरुद्रं ॥ ॐ पीताचलरुद्रं ॥ ॐ नकाचलरुद्रं ॥ ॐ
माचलरुद्रं ॥ ॐ देवीनाकसायानमस्तु ॥ ॐ वज्रजाप्रियरुद्रं ॥ मूलमंत्र ॥ ॐ प्रह्लापा
नमिर्नरुद्रं ॥ द्वितीयमूलमंत्र ॥ ॐ श्रीहरीरुद्रं ॥ ॐ श्रीश्रीमूलमंत्र ॥ ॐ पित्रुप्रह्ला
वर्द्धनीकनरमधवर्द्धनीधिनिरुद्रं ॥ तृतीयमूलमंत्र ॥ ॐ विष्णुप्रह्ला
वर्द्धनीकनरमधवर्द्धनीधिनिरुद्रं ॥ चतुर्थमूलमंत्र ॥ ॐ
इषवकीरुद्रं ॥ ॐ माहवकीरुद्रं ॥ ॐ पीठनवकीरुद्रं ॥ ॐ नागवकीरुद्रं ॥ ॐ
श्रीवकीरुद्रं ॥ वालिमंत्र ॥ सामान्याय ॥ ॐ नमो हगवन् श्रीचन्द्रमहारायभ्य
दवास्त्रनमनुष्ठापनाय सकलमालवनविनायकभ्य नमस्तु ॥

वलिगुरु मम सर्वविघ्नान्हरन् चतुर्निवातयन् प्रागयन् प्रामन् प्रामन् हिन्द
हिन्दन् प्रागयन् प्रागयन् ऐषयन् रुद्रं हिन्दन् इष्टसत्त्वान्ममविन्दुदक्षिणकान्
स्मिन्नरुद्रं स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो देवीनाय श्रीचन्द्रमहारायभ्य नमस्तु ॥
चम ॥ अथ हगवन् प्रह्लापा नमिना हगवन् मरु नालिगयन् वज्रसंक्रान्त
हनिष्यन् क्रमयागमत्वा वनकिट्गो हगवन् ॥ यागीनाच्चिह्नार्थयष्टिर्न सत्कलि
कृत् ॥ अथ हगवानाह ॥ निष्यन् क्रमयागमत्वा यागे यागे कगत्वा लाययदकचिदं
नममनुपमहनिर्गकल्यस्तुतिं नावन् वनवन्धनापि निर्हन् वाठनेवागिधा

एनयथेवहृत्कोवृत्तः मागनेइहिमनेचार्थहृगिनीलागनेयको अन्वाचहृगिनीनां
 रीनअमिनीडासलीनथा चक्षुलिनीननिचैवलकिकिंनुपकिंविका। उमिनीयागि
 नीचैवतथाकापालिनीपुन अन्वावायथापाफंसात्रयमसुसंहिता। प्रवयन्सुवि
 धाननयथाहृदयनकायन हृदयुक्तफयमुनापरमहृत्तिताधकंश्रुविधोपाटयनध
 खर्गपागनविषयान् नहृत्कोहृत्तिलिदिपनतापिनरथेवच गलागुत्तकत्यन
 कर्त्तव्यनदिगचलं जाकिनीमंश्वरगम्यचन्द्रमीषमसाधने अश्वककामिनां
 मर्थमसावृद्धनदगिनं मनोवृकनकदगसुवापिडववर्जिना प्रसन्नमां समादाय

स्वचमानमकामिनं वृद्धाहंवाचनसिद्धप्रहापानमिनाप्रियाहावयन् स्वस्वत्रुपमग
 रुतश्चमसासुधिः निऊनथाययंकुलायधनधनवमुक्तः स्वययिचवचदासीमया
 न्यदययागन क्रियप्रसक्तंरुलासुत्रिचापवसाहि दासांमनान्यनागमनाधम
 याचमिऊयन् नगादृष्टिस्वस्थयनिष्टदकायमानस नयाकथेववक्तव्यंस्वर्गंऊक
 नेववस्वमपशाः सिंहर्त्तित्वंममापिनामह नवाहंऊननीलार्थहृगिनीलागिनीयि
 का सुफहिप्रवृषदसित्वंमखगासचनकः स्वमकपदकडीमः नवाहंस्वामिनीमता
 पनचलर्यास्वभवहागिनीयिका हामिप्रवृत्तार्थावलास्वसालक्ष्माभिका नवाहंस्व

५०

आदासगीरुऊरुकिपनायमं यसमांरुपयानामहहृदिनिनिऊरुमे॥ नमसाप्रभुपंत्य
 साचुमयित्तामुरुमुरु॥ ददामिऊरुनेमरुवकवकनलमधु॥ यमंनानयनसदगं
 यलविचानयन् वनमसदगंवाक्कुरुवेनाचनेमम॥ पिनाआत्यऊनंप्रउसपिमां
 दागकोरुव॥ नवयस्वामिनीचाहं मानानाऊरुलित्यजिमदियचनसंगऊरुनलम
 नमिनेमनं मयासेवर्द्धिऊरुलालमानर्घ्यमुपागम॥ ऊरुहोवहोवत्तदहिभव
 ऊरुसुखं॥ त्रिदनंपमकीयलमध्वकिंऊरुलूपिनी॥ अहासुखावगीऊरुथंनऊरुवृद्धोप
 गमहिनी॥ नागिनांसुखदंगऊरुसर्वसंकल्पवर्द्धिनी॥ मासुताननसंपातानामविहृनमा

र्दनं पादचानसवधश्चरुमिचापि न च न्यस्रमदं कं केचेन वन्धचिद्गृहकं श्रमनिज्ञानव
 धश्च यजानुद्धार्यपादकं न रथेव कुमबंधं च सर्वगाह्यमवच ननपर्यकुमध्वकुश्रीयसा
 नकुटिकासना ॥ कृत्वा वारुश्रुगं स्तुतमस्याभाधनयाऊयश्रु स्वस्य वारुश्रुगं नस्य कऊम
 ध्वनिनिर्गता ॥ पदापपवजं उख्यता वन्धस्त्रिदयाद्यथाहस्तश्रुगवेवगीवर्द्धमन्या न्ययो
 गन ॥ षड्चालयद्याख्याभायंठनवाननं नस्याजानुद्वयं स्वस्य हृदि कृत्वा उहं प्रने दा
 नचाननकनन्यासा दधाय जानकयह ॥ मस्यापादगतो स्वस्य चानमूलनिषाऊयश्रु स्वस्य
 दयकनन्यासा दधाय चानुमर्दनं नस्यापादगताना लोहृदि पार्श्वद्वयपिहि ॥ दनचाननक

क. नं

नन्नासद्वयपादचाननं ॥ नन्नामूलद्वयं ह्यसौ सल्लापकाउकागन ह्वादयकनन्नासाद्वय
येहमिचपिनं ॥ मातृकृदकनसल्लापद्विपादे ॥ प्रत्यनयन् वन्धसमन्दककाहयंप्रत्यकं
चापिमानयन् ॥ नन्नापादयमवकं कृत्वा वामपथाजयन् ॥ सर्वपिमुखचापिहृदापिहृत्स
॥ गमग ॥ हस्तदिमदनं कुर्याद ॥ अयंचिप्रसंहकं ॥ ह्वादयकनन्नामातृकाननपादयन्
सर्वनचकननेतवजपमानवगयन् ॥ नन्नाजातृकनष्टहकहस्तनिधायकयन् ॥ हन्ना
वगिहस्तनयमनिगतल ॥ गिहस्तन ॥ नन्नापादयगंदलाखलं ॥ अपनिनिर्हने ॥ यथातृका
हयंव ॥ अथमावगप्रयागम ॥ नन्नासमदं ॥ अथमावमातृकल ॥ नन्नासमपदलं ॥ अथ

१०

नन्ना ॥ ह्वादयगदलाहामा ॥ अथनिनीकयस्तु नदकं ननपमं मनस्यप्रवगयन् ॥ इहि
अथसहयलं लंकाटिमथवदं ॥ मयिप्रिदनेपमं मायवमिहमन्विनं ॥ हवजं नप्र
क्रियसखचिकप्रपूजयन् ॥ वायवाप्रपमं मसासासानमनु ॥ नवजसा ॥ यनसंभुदं
नकवचुकसंनिहं ॥ अथकिमितिमा ॥ अथानधीहनेकचमसा ॥ अथयन्यजकं सोखं नि
अथामधचिकन ॥ नखेवंकउनेदयादिलसलं प्रियजसं ॥ यावल्लीदहमं नुपंजसमा
अथिविकयन् ॥ श्रीमकाजननी ॥ अथप्रिजगमा ॥ अथदाप्रीया ॥ अथद्विदिहनिन्दयकि
मुखनायपापकर्मणिगा ॥ नननेवइमावमहकं ननकनोडं सदाइविनाकन्दमावरु

कंठ

[illegible]

मसुखा मूलन ॥ उद्धर्षाद्वहयं वंधसं मुखे इना स न ॥ नसापादनलवका ॥ मध्यममनियोज
य ॥ वारुणायादयान्क्रमव ॥ धउदाह ॥ नसापादनननयकं ॥ १० मुद्रिनिथाऊय ॥
वधयं सर्वना ॥ सर्वकामसुखप्रद ॥ चिद्रूपम्यककेयावत्तुर्ग्यात्तुर्वनिचिप्रकं ॥ ११ उ
नपीउयम ॥ चउनायमयागन ॥ सुखयमुखं नसा ॥ यदिचुप्रनप्रना ॥ उनासवनं हहा
यथकंडाककंदन नहिं कालं चवर्षयमसा ॥ पिधेहालमुराहूनाहूयचपिदंदन
मलसोरखं विलवय ॥ पीनयचदकडिहामिषअधनविधानकं ॥ जिह्यानासिकान
धं ययनयकागिकोदककऊधरनऊावं मलसर्वचहऊय ॥ मऊमैयसंनवानेवा

र्भुकं ऊंकलरुने ॥ सुमयित्वा नखदका मयस्मान् प्रद्वयप्रिया ॥ मदमयागिना चच सुमय
 दंशय मम ॥ स्वयमुक्तानि कां कृत्वा सुमय ॥ सुन्दरादनं श्रुत्वा हस्ति म पूर्वस्वाम्
 रुमृक् ॥ हस्तनयागयत्तमं चापुत्तनमिदं कुवन ॥ दद्यान् नखचुम्बन प्रपञ्चनिष्ठम्
 पानिनां घ्रात्वा गन्धं च मन्धसधनदग्नया प्रिया ॥ प्रविष्टा ह्यथ न ननि नृत्तमश्नप्यम
 कस्वन्दन प्रदग्वाक् प्रह्लायेनासिकाञ्ज ॥ नृयमवपग म पत्थ हव हान नयाग
 म ॥ चन्दना वलसिद्धकु हव हान प्रयाग म ॥ पमग मं श्व म न कं वा सुख सो ह्व म
 ह्वयत्त सुखं मसा पत्तय प्रनः प्रन ॥ सुनष चालकं कृत्वा मर्दय हा सुचतुर्दो २ मरु

कञ्ज नंदशा न्मध्वल घुमृष्टिकां न तथिना पनार्थश्च कुर्याद्योगी समाहि न ॥ रुच्यवावा
 पकं न नदय सोख्य कमान स ४ यथ चं पऊनं नो वा ऊनं सोख्य कमान स ४ ऊनि न चालि न
 त्रमं जा नूपाद प्रयाग म ॥ ह्वयत्त मगलु कं श्वनि नश्च पिडि कया ॥ नागया नलिकाया
 गपि वत्ता मर्थ वृद्धया ॥ प्रऊन जिह्वा पमं प्रह्ला मर्थ प्यचुम्बय ॥ कोठी रुधु न म ४ प
 श्व ह्वयत्त त्स मां स कं ॥ पिथ इधं च मद्यं वा प्रन काम प्रवृद्धया ॥ समर्पि र्ग न न पश्च
 दिक्का या उ सुखदि हि ४ ॥ प्रन ४ पूर्व ऊम ने वदं द मन्थान् मान ह्व ॥ प्रन नात्ता सया र्ग
 न हा धि नं च मे हा लखं ॥ चन्दना वल पद लु क ऊन ना श्व यो ग वि न् ॥ नागि ना सिद्धि दा

क. १

नाथमयायोगप्रकाशिका ॥ नागजं धापनिष्ठाप्य सर्वजं घातुनीलया ॥ रथागायं सत्त्वपर्य
कसर्वकामसुखप्रद ॥ पश्य पर्यकमावधवा मजं घातं मर्षयन् ॥ लीलया सर्वजं घातुव
रूपपर्यककष्टसूतः ॥ हृमोपादमलहृत्पापसुप्तसुखदिर्घक ॥ सर्वकामप्रदहृयं वैष्णव
नकासन ॥ हृमोपादमनेहृत्पापवज्रनिर्घकसुदिर्घक ॥ शृङ्खलसूतनहृयं ॥ मत्कामसुख
प्रदं ॥ प्रियञ्जानुशृंगं हृमोपलम्भमभ्युपलक्षकं ॥ कृत्वा वैष्णवसुप्तसुखदिवाकामसुखप्रद
सत्त्वपत्रं गन्धवज्रपर्यकमिमिकलिम ॥ उक्तं कनकशर्द्धवत्तु श्रद्धासुप्तमिदं मगं
श्रद्धवत्तासुनासीनां श्रीयं कृत्वा निनं नमः ॥ यमित्वा सुविदुस्तं गुच्छकनं कनकनं नमः

१५

वधासुनी कृत्वा वामनं उज्जयन्तं ॥ नमो पातयित्वा उदमस्या संनिहना स्यापि च ॥ नरसुप्त
स्वध्यायानं च उवाच योगिनः ॥ नमो श्रुता हृदयागी सर्वसंकल्पवर्जिनः ॥ विनागनहिर्नवि
रुक्तत्वा माधी प्रकाशयन् ॥ अनुरागप्रपन्नं प्रमथविनागा इत्यमापन् ॥ नविनागपन्नं पापं
न प्रमथसुखरसं नमः ॥ नमो वकामजसुखं चिरं कुर्यात्समाहिमं ॥ मृधहृगवनी प्रमृदिनहृद
या हृगवकं नमस्तु मृहिने नमः नमः ॥ शृगवतकीनामवकं वनमयं साधनापा
याः नमो मपिना ॥ हृगवानाह ॥ शृङ्गान्नकाय उत सर्वदिक्कववलिमा ॥ देवास्तननाना
गस्तपिसिद्धिनि साधकः ॥ श्रुत्वे वैष्णवमहं नमो दया देवा ॥ गोमाला श्रीगविपलादि

दवमिश्रहिलाहाविउमानद्या॥ अथ गन्तुकं सर्वं नल वन मृदु कंचे उनाय सपदशा
 फाविच न किमही नल॥ गय महेश्वना वज्र कनल नसिद्ध बाह् दवा वज्र नाय सल
 नसिद्ध॥ दवका वज्रपासिलेन कामददा वज्रानल गल्लन॥ उवंप मृखा गंगानदी वाल
 का स मादव प्रथार्थ सिद्धा॥ पंचकामा पुना पमान सर्व सलार्थ कामका॥ नाना सुखिध
 ना सर्व हन माया विना किना॥ यथापका हव पच पंकदा पे नलीप्य न॥ कथा वाग मया
 ह गालिप्य न वदाय के॥ ॥ ॥ सुकनवी नाख्यी चन्द्र महाना घल नं जनिष्य नया
 गय टल पष्ट म॥ ॥ अथ हगवनी महामेधुने कर्व गाऊ कामहान स्यापनि श्रम॥

नसविश्रव नार्थे कल्वर्थे वकु महसि॥ हगवानाहा॥ प्रिसोख्य समाल म्वा सूप न ऊनि
 प्राधिगी॥ हकि न मत्समा संकुपि व मयं समाहि न॥ अमह ऊय थाल घट्टादि कि नजी
 नकी॥ दीनो प्रथम नादया नू नुत्तुष्ट उर ह ऊय न॥ नसा उत्तुष्ट पशु उहा कचं च निने न
 न॥ नसा मच मनि नं पं प्रजा ननं पि व न॥ उउप म प्रजा न मृष्ट क मुदि प्रजा न य द्वि
 वाने ह ऊय नसा ह ऊच च उ समा॥ पि वे च या निऊ वा निरु ऊय लव क पि लु के॥ यथा सका
 न मासा यष्ट ऊहा निरु नाधिक॥ दये व सुविहा रग न मान व सख स रु न॥ नऊ वाना पि
 नागश्च न मृत्तु सुदेहि न॥ सव यद लु चिया सो निया सो निया॥ अपि स सिद्ध गि॥ ह ऊ

क. नं

वायदिवाहस्यस्येवनकस्ययम् कार्याकार्यमथगन्तामगम्यचित्रयागविह नष्ट
ननचपापेनसुर्गेमाऊ नकस्ययम् सहजानन्देकमूर्तिमुनिष्टयागीसमाहिता उवे
योग्यप्रमायागीयदिस्याहावनापनष्ट चन्द्रवाधेकयागनमदाहंकात्रधानक यदिव
अगमं हन्यादपिपापेनलिप्यते तस्मादयविधेनार्थहावयवमुनामम यनेवनन
कयाकिऊकवाभोडकर्ममासापायनपुननेवमाऊयानि नसेगय मनपूर्वगमस
वपापप्रथमिदममे मनसुहकस्यनाकात्रगमिहानादित्यदिही विषममप्रिमेयद
रूकसायायषऊय मदवमंकिमंरूखा मुखमाप्रथवईना अथतस्मिऊ तदविष

२१

हापानमिगावना कर्हिकखपनकत्रव्ययचमुनामममुद्रयावऊचडि महाकूटहानद
रीष्टसुमं मदियंरूपकथात्वाकूलाहंकात्रमुद्रमं यदिवअगमं हन्यात्तापिपापेन
लिप्यते मदीयेरूपमाधयमहाकाधेकचमसा मानयत्तत्पयकिश्चयागिनिनेव
लिख्यते निर्दयाश्रवलाकूधमाननार्थार्थचिह्नका क्रियसुर्वाहिपापनमासाम
र्थप्रकाशिनी ॥ ॥ ॥ अथकनवीनास्थशिवमुद्रमहाभाषमनकुदहयीनपटलसफम
१ ॥ अथहगवानाह हगवनीपंचमंउलनमस्तूलाहात्वांदययागिनां रूपंहाग
वउकथंप्रियं हगवनिवानाधिकनयागिनीनांरुविद्यति अथहगवनिश्राह या

क.ने

वदितुं न लोके मी नृपं हवन प्रया ॥ नन्ददियं ममं नृपं नीचानी च कूल गमं ॥ दविचासने
थेव यजुना जसा मथा ॥ नागिनी ह्मिनी कन्या किन्नरी मानुषी मथा ॥ गन्धर्वी चानकि चेव
निर्य कन्या थप्रमिका ब्राम्ही कुप्रिती वेग्धा सुदीचा स्य कवि सुता ॥ कायस्त्रि नाज पूर्वगि
ष्टिनी कनउहि सि ॥ कुरुतिनी अम्बि चं जली गवनि सि मथा ॥ ५५ विमि सोडि नि गं डला
निमि कर्म कानि सि ॥ नापि मि नमि नि कं स कानि सि सुवर्ह कानि सि केवर्हि नि खं डि नि कु
ड कानि सि वापि मानि सि कापाली गखि नि चेव नृति सि कमानि वा ॥ ५६ पात्नी व कल कानि
च का विगि च गि न कृति ॥ ५७ पति क ग का नी च सर्व जा नि समावृता ॥ माता च ह्मिनी ला य

२२

माभिका ह्मिनि यिका खुडिका च स्थग चेव अन्धा वा सर्व ह्मिनी ॥ ५८ मिनि धानि सि चेव
अन्धा वा सर्व ह्मिनि ॥ ५९ चम्पु चापि मपथि नि ॥ ६० स्यादिव हव सर्व मि या नृद्राय संग वा
स्त्रि मा वे सर्व सत्कार्य स्व स्व नृप न निधि मा ॥ ६१ मासा भव यथा सा हं चेव नालि ग नादि हि ॥ ६२ पप्र
वज्र सुमाया भया गि नां लक स विनां ॥ ६३ विना मुद्रिय सिद्धि सर्व सत्तु हि मर्वि सी ॥ ६४ किं ऊन
माय स मसा सेव य मुद्रिय ॥ ६५ मि य स्व र्ग मि या धर्म मि ये भव य न न पश ॥ ६६ मि या बुद्ध मि य
संघ प्रसा पा न मि ना मि य ॥ ६७ पंच वर्ह प्रह द न कलि मा हि न ना म न ॥ ६८ नील वर्ह कु या
ना नी धव वर्ह प्र की र्ति ना ॥ ६९ ससु गो ना ड या ना नी मा ह व जी हि सा म ना ॥ ७० पी न वर्ह कु या ना नी

五

सादविषीउनवडिका नकलोनाउयानानीनागवडिप्रकिर्दिना ॥ १ ॥ सामवर्त्तुउयानानीन
व्यावडिमिकथन ॥ २ ॥ केवहगवनीप्रहापंवत्र्यमसंहिता ॥ ३ ॥ प्रष्यध्रुपादिहिवक्रमयस्कथा
गसाहने संलखननमस्का नेसंप्रकांऊलिधनिमि ॥ ४ ॥ दगनेस्यगनेचापिस्मन ॥ ५ ॥ रुहचकने
चूचनालिंगननिसंप्रकांऊलिधनिमि ॥ ६ ॥ गकोकायनकर्त्तव्यं गकोवाप्यचनसा ॥ ७ ॥ गनाह
पूजिगाउलासर्वसिद्धिददानिदा ॥ ८ ॥ सर्वकुदहत्रुपाउस्यसा नान्याहवान्यहं ॥ ९ ॥ सत्का मुष्ट
ऊनंनान्याममदिसाप्रकांऊलिधनिमि ॥ १० ॥ मननानाधननाहउलासाधनप्रतिदय ॥ ११ ॥ सर्वप्रसर्वसा
निसुंनस्यष्टिपथंगमा ॥ १२ ॥ मदीयास्यत्रुपंवध्यात्वास्वलिंचकामयन ॥ १३ ॥ वऊपमासमाया

23

गमस्तु हं वा धिदायिनी । न स्मात्सर्वप्रकान्तसमानाधननत्सना । बोनिमपियाददाक
 र्यादिवा प्राप्तिमानन । वदद्वर्पमृषावाचं हजयप्रतिमादिकं । साधिकं हजयद्वार्थ
 लोपिकं प्रदर्पकं । न पापैलिप्यनयागिममानाधननत्सना । नदियं मक्तकस्तु कया
 पागीधने कनत्सना । नखनवनययुक्ता वक्तुस्तु मपिमानयत् । मुननेव प्रयाग
 नमममानाधयद्वर्णी । न कुर्यावहयपापनानकादोउउर्गमो । हयं कुर्यावक्तुलकस्त
 यावक्तुकिननस्तद । न पापं विद्यनकिंविश्वनप्रमं किंविद्वस्तिलाकानांविश्वनअ
 येपापप्रमं वक्तुना । विश्वमायं यनसर्वजनमायं वक्तुनि । ननकमक्तुनका

क. नं

सोसुगनप्रयानिहि ॥ यथेवानंकनामृत्सकलविषयप्रहं ॥ विषयाहवयिसयानिम
थस्वकमध्यगनी ॥ उवहमपनिहामानिर्वानचानब्रधे ॥ निर्वानशून्यमुपकुपेदिवस
वाननः ॥ उचुदवयदसमसापिनवाधियदमशून ॥ नस्यात्सर्वपानिसुमामवानाध
यदगी ॥ ददामिउममाश्रमचन्द्रसिद्धिनर्गसयः ॥ मथहगवानहगवनिप्रहापानमि
नामाह ॥ किमाकाशवशस्यसिद्धिमुकीदगी ॥ मथहगवनीशह ॥ पंचवर्कप्रह
दनयागीत्यायापलीपिगा ॥ मासांस्वस्वहर्कानपंचवर्कप्रहदम ॥ चमसर्वउवेय
यानान्पाकुमयादिमं ॥ नीलाकर्मकुयाहर्काननीलाचलसुमः ॥ मथमलोनाहियाह

२४

ह्रीसल्लमाचलसंरुका ॥ पीमवर्कहियाहर्कानस्यानपिगकाचल ॥ नकलोनाहिया
हर्काननकाचलउदाहन ॥ सामवर्कहियाहर्कानस्यानपिगकाचल ॥ उकयवरुवेव
नपंचनृपसंलिग ॥ उषचमसमाख्यानाः ॥ ससिद्धिरुत्तम ॥ यावदाकागपर्यकंदि
यनृपसंलिगि ॥ चन्दसिद्धियथेवाकानथचंठिप्रसिध्मि ॥ ॥ ॥ सुकनवीनाख
गीचन्द्रमहानीयमनकुस्वरूपपटलमृष्टम ॥ ८ ॥ मथहगवनिशह ॥ कथंहगव
नृपहापायनहंकाशालवनीय ॥ हगवानाह ॥ यागीश्रीमयनेहस्यामृन्मायदृष्टिनत्यन
नरुकायसमाधयधायदकायमानस ॥ चउकायसलवत्याहदनाकिमनागमि

क. ३

विना बाध पुनर्बाध प्रहापाय यामनः॥ मृत्पुनर्वाचन धर्मसंहाग खं न नाहव॥ निर्मा
न स्वर्ग नृपैका गहस महासुख॥ चतुकाय सहा वायं प्रनृष लुप्रिधुका॥ चतुकाय
स्वहा वक्तुया उक्तिधुका॥ प्रमान च हव वृद्ध चतुकाय स्वहा वन॥ प्रहापाय मिनादि
च सर्वदिशु अवलिता॥ मल कुन हं का नृपैका सिद्धा हं प्रन॥ चन्दनाय सस्व नृप
मनिज नृप संहिना॥ सिद्धा म कामिनि चदि नृप माधाय सर्वग॥ सा नदं हा वयदि
रुदिर्यका ननु नत्व विन॥ सर्वकर्म पनि शुक्ल वा मासे वेक नस न॥ गितु लोखेक
शिशु नया वलिदि न नखन॥ सिद्धि लया यदा यागी सहा या प्रमि आह वन॥ दृग्ध न

२३

नेव लाक कुवा पुचि रु वि म विन॥ सर्वह सर्व (ग) व्यापि सर्वकृग विवर्जित॥ नना (ग) न
ऊना नस मृत्पुन स न विद्यन॥ विषे न कम न न स न ऊने नापि पावक॥ नग मुन ग प्रसेष
उ स ह वक्तु कदाचन॥ मन लां कि न माधय सर्वकाम नृपैका॥ मन्ऊ स हा मिचा वले
चिना मनि स माहव॥ लाक धा उ स म ह पु य प्रय वे व संहिना॥ म स म प्रविमान निजाय
क सर्व स मिने॥ म स दिव्य मिथान म्या नृपैका ह न म मिना ह विद्यति न सन्दहा या वक्तु
गमानका॥ उक्त विम्व म ह सापि स काने गदय रना॥ किं क ना हा कि सर्व व प्राति न वग
मिना॥ य (ये) वा या गि न सिद्धि या गि न्या श्रु (ये) व हि॥ न ना व ऊ ध ना का ना या धि ना व ऊ

क. नं

याधिरु अथ हगवनिनाह (कथं हगवन्दहसिंप्रहापानयागनसुखमहइत्ययम्) हग
वानाह ललनाप्रहासहावनवाननाडीववहिनः ॥ अथ धृष्ट्यायसावाशुक्रमसमनमी
हमगीनस्तेधपमं हऊन (धनकी हगमकने ४) ॥ प्रहापायसमायागमचन्सलिनहिसंलि
गा दीपकलमननडाचनसुक्रमुद्रमं ॥ ननास्ययमशोर्यं स्वसं स्वसं प्रयागम ॥ नना
हचामहयागमरुचवकुसुहावम ॥ ननुरंयनवर्द्धसाविष्मस्यासयागम ॥ सयीमनच
धुनायमस्यादस्मिन्नवहिऊनाहि ॥ ॥ नूतिकनवीनास्वशीचउमहागीस्वनमकुं ध्यानप
दलीनवम ॥ ५ ॥ अथ हगवनीनाह किहगवनकीवमिनकनाप्रगव्यनसाधयिउं

२७

चमुनायसपदंउनाहानसुकम ॥ हगवानाह ॥ नगव्यदवीहगवनीनाह ॥ किहगवनसु
त्वादयानगव्यम ॥ हगवानाह ॥ नसुरादयमाईसलसुनवाधिरुधम ॥ सुरविस्वरादया
दवप्राप्यमसाचनान्यथा ॥ नचकार्यविनानेवजायम ॥ काननकुप्रियायागमनचान्नाउक
राचन ॥ सर्वास्त्रामवमायानांमुमायेवप्रससम ॥ नामवाफिक्रमयासोनसिद्धिसाधिगच्छ
मि ॥ नस्यानकुयागमयेकर्तव्यककदाचन ॥ यवयदिहव्यउरुवमृकवंधननिर्हय ॥ संघं
सर्वमवदंक्रियंनेवउसस्य ॥ यस्याइवक्रियसर्वास्त्रवेवृद्धस्वयाविका ॥ निलजाचंचला
ध्वनिनिस्कासपनायमा ॥ सिद्धिमगाददकंचसर्वस्त्रवनसर्विमा ॥ मुतात्रपकुकिंवाच

क. नं

प्रियं कचपि प्रमनं ॥ यत्नं न ववियाग न किं वक्तव्यं मम पते ॥ जलात्तर्वाभियादवा सर्वार्थ
वय कल्पयेत् ॥ मनः संकल्पिना अपि कुरुपाखान कदिहि ॥ भिन्नं च प्रमादवा दवमाप्ति
न न स्याहि ॥ अन्नाभ्यावय प्रजां वरुपम प्रयाग न ॥ नाम प्रजय दवं स्वाधिष्ठान मपि स्व
पै ॥ मत्ता धीमि कृपा विष्णु मंडली कुरु मय ॥ उपचरं गमियं क प्र प्रहा पा न मिमा कुरु ॥ प्र
प्य ना स च पति सुधु पादि हि कुरु ॥ पश्चाद्वै दना कुरु संच मे उलयोग न ॥ न न ॥ प्रदक्षिणं
कुरु यदि प्रजा कुरु गुरु ॥ श्री गथा प्रजयत् नृपं सा द नैरुक्ति च मत्ता ॥ कुरु दिव विना
प्रजा मत्ता संचा कुरु किं न ॥ निरय च क्रिय नै व प्रार्थि क पति ह न न च ॥ वक्तव्यं मधु नै व

२०

कंदारवं च नृप न ॥ वरयत्तर्वहा वन यथा इष्टा न वृद्ध न ॥ यजने वक्रियं कपि श्रुतं वृद्ध
पितं ॥ अन्नाभ्यावय कनय सु सपि न न क म मत्ता म न म मप्य न्ना सिद्ध ॥ श्री विद्या ग न किं कुरु न
पसा सिद्ध न नै व चै उ ना व म सा ध नै ॥ निरु नै मा ह जाल न बाध्य न नि र्मल मन ॥ काम न मर्जन
कामि मिथ्या जी व कुरु जा य न ॥ मीथ्या या जी व न पा पं पा पा उ न न क गति ॥ लह न श्रु क काल क
मिथ्या जी व न गं स य ॥ मृग उ व सा ध्य सिद्धि काम नै व विजाल जे ॥ पंच काम न ध्या त्वा न प सा
शा स न पि उ य न ॥ नृपं प स य थाल ह्य श्रु या रु द म व च ॥ गध सा जि प्र नै क र्था ह क य प्र स
मृदु म ॥ सर्ग य ॥ सर्ग नै क र्था संच का मा प स व नै ॥ ह व स्त्री प्र न न वृद्ध च न सै क क म स न

क. मं

नामप न वे च नानास्ति न च भा हा प्य न प न **मा** नू ष्य या व न स वा श्री सूरव ना प्र हा ग नी **नि**
हू नं चापि दं भ नं व्य यं हू ला मह क नी **स** व क का मि नि नि स का म मा प्र प ना य ना **च** स
भा प ग प दं द स्था या वि या नि स मा यि ता **॥** **स** व क का मि नि क थं वि डां हू क नं हा स म व च **॥**
क को हू य ना सार्थ मा या द वी स न ४ सृ धी ४ **॥** **च** पु न मा मि स हू य मि स क का चा क पु नै पु न
ग ल्हा नि नै ऊ नी की नै वृ ड सी मि प्र का ग क **॥** या मा मा ला नि ला कू य न वे व प न मा र्थ म ४ **॥** य
हा द न पु नै वृ ड सि द्धा य क र्पि म हू र्वा **॥** व ऊ य अ स ना यो ग स नू र्व ल स न य म ४ **॥** सूरव न
वा प्य न वा धि सूरव न कु वि द्या ग न **॥** वि द्या ग क्रि य न य कु लो क को हू य हा न य **॥** य न य

२४

ने च म ला का या नि चू ड वि न यि ता **॥** न न न ने व नू प स मा या द वि न सृ ऊ जि न **॥** सर्व सृ ज हि
ध र्म स हू ला नि स क या यि ता **॥** ना न गि जा प दं हा य न स व य म हा य या **॥** नि र्व स द ग नि
वा पि पं च स्रं ध वि ना ग क **॥** अ थ ह ग व नि प्र हा पा न मि ता आ ह **॥** का ह ग व नू मा या द वि
सृ न का च (अ पा **॥** ह ग वा ना ह **॥** मा या द वि सृ न क ह च न्द ना य म मां ग न **॥** त्व म व ह ग व
मा य पा प्र हा पा न मि ता लि ता **॥** या व क मु छि य स र्वा ल डू प ने व का म ना **॥** म डू प ले व प्र
सृ न स र्व उ वं प्र की र्ति ता **॥** दि क्षा हा व ग मं च नं प्र हा पा ना स कं ऊ ग नू **॥** अ थ ह ग व नी
आ ह **॥** क थै ह ग व नू अ व का द या हि मि यं डू य कि **॥** ह ग वा ना ह **॥** का म वा उ छि ता स र्व

क. नं

स्वामाचश्रीदकादयः॥ नोऽकमार्गज्ञाननिक्रियपथंमिसर्वदा॥ सनिधनहवधयइत्यहं
कृमादिकं॥ नयडायसमाज्ञानिरुनरसमहयमां॥ अनायहानयालगनयैवाहिनास्व
मिजिगा॥ चिरुंनकूर्वनंनयमयाप्यनत्स्यगमपिन॥ नथाप्यशकलोकालकादिमध्य
३थकश्चि॥ ७कैकः सखाग२सत्वययलपनायत॥ तस्यार्थहपिनंसर्वसिद्धवाधि
प्रसिद्धय॥ ॥ १०॥ कनवीनारव्यश्रीचन्द्रनरानाषमनकुशीषगसादगमपटल३
नधहगवमीआह॥ किस्वैरगवनसनागसविननयवा॥ हगवानाह॥ सर्वहिंस
र्ववापिचसर्वकृत्सर्वनागक॥ सर्वरूपधनोद्भूकर्महर्ताप्रहृष्टस्व॥ यनयनेव

२९

रूपमसत्वायानिविनयगां॥ ननननेवरूपमस्तिगाहंलाकहनव॥ कविर्बुद्धकविर्
सिद्धि३कविचर्मा३र्थसंघक॥ कवित्पुनकविर्गमिष्यककविर्नानकनूपककविर्
वा३सन॥ येवकवित्मानवत्रूपक॥ कविष्ठावनरूपाहेविश्वरूपनगसय३॥ अहं
श्रीप्ररूपमथपिनप्रसकनूप३॥ कविर्दानीकविदयीकावित्साहिउविक्कविर्॥ क
विच्चासुवित्रूपाहीवित्रूपमसंस्तिनी॥ मदियंदग्धनविर्गमन्यकिवेनदग्धन॥ वस
त्ववमुप्रत्यदाहेजभाहजनकापिहि॥ विद्याहेमहीसिद्धिसर्वरूपमसंस्तिनी॥ अहंजाग
नहंरूपनहंस्तिमिजनाप्यहे॥ अहंपापमहंप्रत्यनत्कर्मफलत्वहे॥ अगद्वमयसर्व

ॐ दं नृप मयं वच्चा ॥ हानवा स मनसा कानया गिनां त्वचि कथ ॥ अथ हगवनी ग्राह ॥ किं ह
 गवनने धेद नृप ॥ हगवानाह ॥ नवाय विविध नृप यथ हे सर्व हि लोपि नी ॥ त्वया वाक्ये
 मिदं सर्वं ह्यवनजं गमादिकी ॥ ॥ अथ कनवी नाख्यो च च महाना पमं वविश्वयद
 लज्जा इग ॥ ११ ॥ अथ हगवनी ग्राह ॥ मद्राक्षे साधने बुहि स गि पौलिके न था ॥ वस्त्रा
 धि प्रयाग मन्त्रा न्नाटनदिकी ॥ विषनागं व्याधिनागं वक्रि रवर्गदिकु हने ॥ तं अ
 भविज्जय नापि पांति त्वमथ वा नृप ॥ यजुषि साधने च न इ न ह नदि साधने ॥ सामर्थ्य
 मन कवि हानं निशि गे न वद प्र ॥ अथ हगवानाह ॥ वल्लभा यम स नाधि क्षा मनु

साधन मान ह ॥ अथ मसा धयत्सा र्च दर्ग वधु म कं व नी ॥ मूल मं य मि गि र्वा तं सर्व मनु
 प्रसाद की ॥ लिखि नी कि छ न य य मं य सिद्धि ह वत् न ॥ अथ य द्वा च य य मु न स पा ये नि र्मु लि
 नी ॥ स न ना वा द स मनु स मा ला या कि दि ग म द ग ॥ न स्मा त् सर्व य ल न मनु म न स सा ध य
 ॥ अथ न स्मि न्म य स मा ला या कि दि ग म द ग ॥ अथ न स्मि न्म ऊ न सर्व ह न य न वा द य ऊ क ल
 ॥ अ म ह न ग म द यः इ स त्वा प्र प ला यि ना ॥ सर्व व्या ध या ही ना सर्व ग्र हा या द घ न मनु न स्मि
 प ह व न ॥ सर्व य सिद्धि या र्हि नृ ख ह ना ॥ अथ स सा ध न ह व नि न ऊं ऊ य नृ ॥ पूर्व स वा
 कृ ना ह व नृ ॥ न न रु क्त प नि प द मा न ह य नि दि न पि स थ्यं स ह सं ज य नृ ॥ या व त् स र्क मा सी

क. ग.

मनाकसकनां नाथिकपम् ॥ महानिष्ठां कृत्वा संख्या ४४ प्रहनिद्या वत्सर्गदयं ॥ ननायं मंजुसि
हो हवनि ॥ ४४ ॥ प्राहनि सर्वकर्मसि कनामि ॥ अथ हगवना साधनं हवनि ॥ पद हगवने
लिखापयम् ॥ पूर्ववत् च उत्रय मंजुल मध्य दग्धत्वे यथा विभाजितम् ॥ नसाय ४४ कृत्वा
पदि पंदमानस्य सिद्धं सहय मके कंजयम् ॥ नना ३० पुर्णमासायथा विहवम ४४ ॥ पूजा क
त्वा संख्या काना प्रहनि सूर्यादयं यावत् ॥ नना हयासूयक नहमयं ॥ नना हगवानाह
हमकिं वनं ददामि ॥ साधकं नवक व्युत्पन्नं दहीमि ॥ नना हगवकस्य गतिं प्रविग
मि ॥ प्रविष्टमा यदि नष्टा वर्षा कृति ४४ पञ्च हिरु प्रयादग हनिष्य नादिव्यविमानवात्री गमस

३५

हयासूयक गममंजुग ॥ कामनूपि सर्वहा हगवस्य त्वाह ॥ हवनि ॥ अथ वाखर्गजनगुमि
कायापादकापादनं नपननाम कामहागे नयं विद्याधनकवित्त्वपंडित्वयकुलीनगस्यर्ग
धं उधु उवदादिकं यथा हिमधं पार्थयम् त्वर्वं हगवस्य दामि ॥ अथ वापनं यकनवीनं
लिखापयित्वा पूर्ववत् साधययम् ॥ नने कल्वीनपनं कृत्वा चलद्वयवक्षालिगिमा ॥ ४४
गावलमाहवक्षालिगिमा ॥ पीमाचलपिंउ नवक्षालिगिमा ॥ नकाचलनागवक्षालिगि
मा ॥ गिमाचल ४४ वक्षालिगिमा ॥ लिखापयीनया अथ वा प्रहानि कवलाहग
वनकार्य ॥ अथ वापनं हगवमि पंदानां मध्य ७ काकार्या न नशात्मानं नसा ॥ प्रविष्टम्

सध्यात्वा पूर्ववत्साधनीया ॥ अथ वा सधियं दत्तं मित्रपुत्रसंसाधयन् साधयसमिन्
 इत्थमपि दत्तानि किंप्रनन्यासिद्धिः ॥ अथ वा प्रसादिष्ठपदं स्वर्गपागधने साधयन् ॥ अथ
 वा सर्वसत्त्वपथीकिं गस्वर्गपागकनासां कोटीकृतसाहचर्यं साधयन् ॥ सहजचंचुमहा
 नाथसंपूर्ववत्सिद्धिः ॥ उवंहगवत्तपसिद्धिश्च धर्मिष्यां भस्मावपि यन्निश्रुताभि
 नीचद्वकाकावमइहिना ॥ यंधुकाभधमिनवैमिश्रालकिनिमनवीनादीर्घजनीसाधय
 न ॥ वगकोष्ठमयाथीदविनाजानशरदवदानुमायां निलाकमागगिदवीकां न नमालाई
 उनाहानितीनलमाला नकाउर्वसाहपभलनिसव्याघं ॥ नागनेभधयन् ॥ उवंसुव्या

चन्द्रमगलं वृद्धहस्यमिश्रकगनिश्चन नारुक्तु नवयहं ॥ उवंलाकधनैव ऊपासिमं रुथीप
 हिमिंवाधिसत्त्वान् ॥ उवंविपद्यागितिविद्यहृप्रहमिं वृक्षानसाधयन् ॥ उवंमवनाजिगा
 दिनहृगाना ॥ यवंयमायादिनहृगान् ॥ उवंवज्रकं कालादिनचमकाल ॥ उवंसर्वसत्त्वान
 श्रीनृपादीनसाधयन् ॥ सर्वशास्त्रात्मिकागहविषयमि ॥ अथैकवानानसिद्धिनि ॥ नदाप्रनदि
 नीयवानंकुर्यान् ॥ नमथापीचरुदाशुनीयवानं मानहृगु ॥ नमथापिच पूर्वकृतमहादसुखा
 ग ॥ नदावामजानुनां सप्यपादनचाक्रममावजुष्यावत्सिद्धमि ॥ नगावस्रघ्नस्यापिसिद्धमि
 नयेदंचंचुमहानाथससाधनमकुविहत्सदं ॥ उंचंचुमहानाथससागकुरु रुरुद ॥ स्वर्गदि

सिद्धोऽनुश्रुतं केमसाधयमिथाऽप्युपादाक्रममनुश्रुतं हनहनमिथाऽप्युपादाक्रमं ॥
 भक्तवानाच्चानमनसुर्वविषयाननकर्मकृतान्मपिदहोमे सर्वपादावादिहमप्यनिमां
 साधकपवकव्यं ॥ अथवास्वर्गसाधनमनस्तदापुष्यजानिलाहमयं ॥ मनकासुम
 येवायथाहिमनेकस्याप्रिमिमांसाधमयवकव्यं ॥ अथवापेवगन्धनआत्यसुर्वगन्ध
 समानस्य पूर्ववदाहोपनिष्टकृषिसंध्यमासमकंजप्युपादाक्रमं महामिपुजाकृत्या
 लकनानाभिऽप्युपादाक्रमं कृत्यालमिस्वर्गविद्याधनाहवमि ॥ दिनकवर्षादिमिनाकुचिग
 स्वर्गकगकुंउलकगेशसंस्तानेपेवकामोविनसंमि ॥ ७७ वज्रचक्रविस्नादित्साधयन्

७७ वज्रादिमयपार्श्वसाधयन् ॥ ७७ वज्रपाशकयहापविनवज्रकृषं वज्रपाशमिमापुष्कं
 वज्रपुष्ककादिताधयन् ॥ सर्वसंसाधयनि ॥ ७७ वज्रमयंगधर्वसाधयन् ॥ वालिकमृगम
 गनुं दवदात्रमयादवा ॥ वज्रविष्णुमहेश्वना ॥ वज्रकामदेवादिनमस्तानां गनलिखि
 तं नाजसां ॥ दवदमत्सेखिलिखितं पपं मदनमयं पुष्यहृदि दनमयंगमपमि ॥ गरीमाउ
 केकासुमयपीत्रुपानादिपिभवंपवायदि ॥ दवदरुमृच्चानयनियार्थं ॥ पुष्पिकांकी
 केलिखितीकृत्वाजप्युपादाक्रमं दवदरुमानयनियार्थं ॥ स्वर्गादिकमस्तानगमवानानम
 उवाहिमन्पुष्पकृत्वाजपमासादयनि ॥ यत्कार्यानुदिग्धवलिदत्वा न ॥ नरुस्यसिद्ध

क. नं

गी पापनागदिव्याधिंमपुत्रपिच्छमशुनगननाहिमन्नुनिऊमकुत्तापमार्जयन्
शुभकस्याशुखनागनागयकियाघं निर्विवंशुननं ॥ ७ ॥ वं वगीहूममायकस्वहृनादा
गनंननेकुङ्कगथायगाध्वात्वापादयकिर्नवदृष्टाऊपगवल्गहवनि ॥ शुभकमेवस
मानयकियाऊयन् ॥ ८ ॥ वंसर्वदाकष्टध्वात्वाऊपदाकृष्टाहवनि ॥ शुभकमारुपयमिया
केशात्मानेधनधमनिधनादिपनिप्रहृष्टध्वात्वाऊयन् ॥ प्रष्टिमंशुर्वनियाघे ० ० दं मकु
निकनदयंसंप्रमंमध्यपधुपूयकं ० कनलिखित्वापंचमलिखे ४ सहनामूलंरुऊयन्
सर्वजानानिनागयकि ॥ सर्वऊनंनागयकियाघं ॥ चंडयहसूर्ययहंवाजीनहकनद

३४

धिरुकनदधिरुकनकंपाशंपुनयित्वागसकनससृष्टनसफानिश्चथपगापनिस्कापयि
त्वा मफागापशाच्छादिनंरुत्वाहस्ताखीमवष्टयगाविऊपशाचनकानहवनि ॥ नंवरुऊ
ययश्चसगाहवनि ॥ शुभनेवकुभनहनिगाने ॥ ग्रावनेमनसिलावासाधयन् ॥ क
ऊनंवाठनीनिलकनोऊलनवाविशाधन ॥ धूमयिगंशुकछानंउषायिगंवगीकनमे
शुधवानागस्वकाष्टमयंमकंनागनाऊंकानयन् ॥ कऊनमध्यशुद्धशुखिकृत्वाऊनदा
कागपगधनहन २ शुनाकंगीघंवर्षाययकियाऊयन् ॥ दवावर्षकि ॥ गगाशुकंऊनाइ
दृष्टजीनसमापयित्वाविगर्जयन् ॥ शुधमयंव्यवलाकयनऊपदृष्टिनकुनै ॥ सर्व

क. नं

वागवृष्टिस्तु यनिकी ऊयन् ॥ नि सा ईदगं ऊनकल ॥ ७ वं द्वितीयं नृनीयमूलम
नुयाकल ॥ हृदयमनुनामयभेवकल ॥ प्रथममालामंजु ॥ कनकीपथक ॥ ८ कनलि
खित्वा नानवकुसुमाखीमवाक कलिमसगि नसिवाहाक ॥ ९ वाष्ट्रदामयादंदत्तावन्धय
॥ १० अधवगसाकृत्वा श्रुतकसकनेनागयामिनि कृत्वा सर्वकनामिनागयकि ॥ वन्धनका
लनागिने पूर्वहिमखाकृत्वा क्षयमत्सहकमयात्वादि पूर्वसनावसेनिमज्जयित्वा ॥ ११ ईद
कृत्वा सर्वकनादयोऽपसुनकुगीष्टं नवनचमुमहानायकमुवंमाहापयकि ॥ यदिनाप
सनिधमथदाहगवनृष्टमिक्कस्वर्गनकिलषमाधकृत्वा कृत्वा ॥ १२ कृत्वा नोवि

३५

शुकोत्तदया ॥ गकोहृदं हवमि ॥ ७ वं सर्वव्याधिजकिनामूपद्रवचवलदय ॥ सर्वहव
षयिपथिकमाधमनऊंकनामि ॥ अपनमूलमंजु कंसर्वकनामि ॥ द्वितीयमालामंजुस
पयमवविधि ॥ ८ द्वितीयमालामंजु ॥ ९ त्रितीयमालामंजु ॥ १० चतुर्थमालामंजु ॥ ११ पंचममालामंजु ॥ १२ षष्ठममालामंजु ॥ १३ सप्तममालामंजु ॥ १४ अष्टममालामंजु ॥ १५ नवममालामंजु ॥ १६ दशममालामंजु ॥ १७ एकादशममालामंजु ॥ १८ द्वादशममालामंजु ॥ १९ त्रयोदशममालामंजु ॥ २० चतुर्दशममालामंजु ॥ २१ पञ्चदशममालामंजु ॥ २२ षोडशममालामंजु ॥ २३ सप्तदशममालामंजु ॥ २४ अष्टादशममालामंजु ॥ २५ एकोनविंशममालामंजु ॥ २६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ २७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ २८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ २९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ३० सप्तविंशममालामंजु ॥ ३१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ३२ नवविंशममालामंजु ॥ ३३ दशविंशममालामंजु ॥ ३४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ३५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ३६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ३७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ३८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ३९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ४० सप्तविंशममालामंजु ॥ ४१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ४२ नवविंशममालामंजु ॥ ४३ दशविंशममालामंजु ॥ ४४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ४५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ४६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ४७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ४८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ४९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ५० सप्तविंशममालामंजु ॥ ५१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ५२ नवविंशममालामंजु ॥ ५३ दशविंशममालामंजु ॥ ५४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ५५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ५६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ५७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ५८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ५९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ६० सप्तविंशममालामंजु ॥ ६१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ६२ नवविंशममालामंजु ॥ ६३ दशविंशममालामंजु ॥ ६४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ६५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ६६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ६७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ६८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ६९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ७० सप्तविंशममालामंजु ॥ ७१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ७२ नवविंशममालामंजु ॥ ७३ दशविंशममालामंजु ॥ ७४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ७५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ७६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ७७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ७८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ७९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ८० सप्तविंशममालामंजु ॥ ८१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ८२ नवविंशममालामंजु ॥ ८३ दशविंशममालामंजु ॥ ८४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ८५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ८६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ८७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ८८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ८९ षट्षविंशममालामंजु ॥ ९० सप्तविंशममालामंजु ॥ ९१ अष्टविंशममालामंजु ॥ ९२ नवविंशममालामंजु ॥ ९३ दशविंशममालामंजु ॥ ९४ एकादशविंशममालामंजु ॥ ९५ द्वादशविंशममालामंजु ॥ ९६ त्रयोविंशममालामंजु ॥ ९७ चतुर्विंशममालामंजु ॥ ९८ पञ्चविंशममालामंजु ॥ ९९ षट्षविंशममालामंजु ॥ १०० सप्तविंशममालामंजु ॥

क. १

निकामयन् ॥ मरु ॥ उं वो हनि म्रु की मश्या कुरु रूद्र ॥ मेनिक या ह ग मालिख ह मी वा
मह रूनां वेष्टि ली सु ग नै ऊप य स ना मा ता श्या यानि ॥ स र्ष पं स फा हि मं धि नै रू वा श्रु रू
ना उ य ॥ निव्या धि ह व नि म न सा क ल य ॥ उ द कं प नि ऊ प ह न्या ॥ त्रि नै प्र स व नि म
कु प नि ऊ प च भु य ॥ स र्व ऊ न प्रि या ह व नि ॥ ल व नै प नि ऊ प य स र्वा न्य द श्या न व नि क
ना नि ॥ सु वा ल कं य स म ल व धा ॥ सु पि म श्रु हि म श्रु स (मे ह व नि ॥ आ दि म्या हि म्रु वा
य स ना म्र ऊ प मा क ना नि ॥ वि वा ल ला म न ऊ य स ग ल व धी नि स वि ला लो ह व नि का
क मा य न ऊ ना का को ह व नि ॥ प्रु य क ग न रु ना प्रु वा ह व नि ॥ श्री क ग न रु ना प्रु व

३०

नि ॥ उ वं स स य स क ग ना म दि न रुं की य न स म से व रू प प नि व रू न ह व नि ॥ य स ना म्र ऊ प
न स न ऊ कृ षि ॥ श्रु नि मि ष न य ना य द स्वा ऊ प नि ॥ स व र्वा ह व नि ॥ सु नि द वि म रु क ल्य ॥ व लि
म रुं म व लि द या ॥ स र्वो प ड व व्या धि वि घ्ना दि भ नि ह व नि ॥ य स्त्री का र्थ त म्रु स ना व लि म्रु प
ह म्रु ॥ न स सि धि कि ॥ गो न प्रु य ग ना की न म ना व रू ग नि ऊ ल न ना व द धि ह क ग ना व ॥
ति स ना व च उ स्र यं रु ला रु ल वि का न प्रु म ना यो ना शो ॥ उं च ड म हा ना ष म ॥ दे व लि गृ
रू २ श्रु म्रु क का र्थ म सा ध य रू रू ॥ ॥ सु श्रु न ग न ना हि म श्रु नि व द य ॥ वि वि क न स
हि म नै सि दि नि ॥ श्रु थ ह ग व नी म्रु ल म रुं म रुं ॥ न ग नै ऊ फ न क ड नै ल न उ वि न्या ह

क. नं

गवसूक्तप्रथमसिखम् **सुखनप्रत्ययम्** **मृननेववममकुक्षकुकिहवमि** **सर्व**
हउरसनपिप्रथममालामकुक्षुयादगदलमध्वलिरवम् **नीलसूयसधस्यित्वाग**
नीनधनयम् **सर्वप्रनकाहवमि** **गलाचनानंदननलिरवमि** **यस्याप्ययविधि**
यर्वमननकुक्षुयकमपिश्रुवेननियोजयम् **न** **धेवसर्वसिद्धिनिहावनागकयमिन**
सूक्तनवीनारव्यीचउमहानापमकुक्षुसर्वमंशदादग **१२** **अथहगवनीमाह**
धनवीयागिनंकनसम्भनसवदप्रहा **चर्याचकीदगीकाम्यसिद्धिकनंसूनस्यम्**
हगवानाह **मानननीनहिबेइहाबुद्धमसनइखका** **नवांमवधनीष्टसस्वस्वहि**

३०

नमाचनम् **चत्वा** **सवाहिवेसवायमिनामाननसूना** **हउयससमागकुपिवमयंसना**
हिग **मिथ्यायाधपनयाशपेच्छादयन्धनयसन** **सिध्दकनिर्विकल्पात्मागुफगिजाप्रमी**
गम **यनयनेवपापनसत्तागकुक्षु** **धगमि** **ननननेवपापमगिनिगाद्येप्रसिद्धमि**
अथहगवनीद्वषवजीहगवकभवमाह **कथहगवनिपनसस्वनेहावस्य** **अथहन**
वानाह **नागनहन्यननागवक्रिदाहाधवक्रिनां** **विषनापिविषंहनाहपदगप्रयो**
गम **निस्रहावेजगगुहास्वसिद्धाहमिनिहावयम्** **सूक्तवाचनसर्वयथकापिनबू**
द्यनं **सर्वपापऊयंकुत्वाविपनिननेवसिद्धमि** **नकदासूक्तयागिनीगोरेकनसून**

क. नै

विपरीतसर्ववचनचक्रसिद्धिरुस्यनविद्यते॥ पापनाशिनप्रवृत्तिनिस्त्रावस्त्रावम॥ ला
ककोरुस्यनासाथमयानप्रकृतिहृमी॥ इदंनिशोकसंस्थितवन्द्यमहाप्रिय॥ यागिनी
लाकावनानायसर्वसत्त्वार्थहृन्व॥ प्रकटंस्मृतंनवकुशुलमधुनाप्रिय॥ नचपानिव
क्रयत्पनसायहानम॥ पनकीहनमनेवसाययन्नमृषानच॥ मयनेवपिबद्धीमानल
ककोरुस्यहानय॥ प्रकटगिजापदकमत्सादलंनमानस्य॥ उक्तस्मृतकनचप्यदानी
प्रकथनं॥ नलमोलिगितंश्रुत्याडाउकगयाकथ॥ नानानंकानकंरुत्साहानयदासद
हकं॥ पादयनप्रनेकार्थमरदलांचनधाकटो॥ सवहृन्मथारवर्गवामपागप्रधानय

३८

न॥ मोलोचमुडनेकार्यपंचवृक्षप्रयाग॥ पंचचीलकुकर्तुंयंस्मृकगविरवसुयेन॥ दग्ध
लोचवयस्कृष्टकवयसिमानत्य॥ पूर्वाककूलहृदनकलावेवकपालकं॥ कूलस्यदन
वेकुर्यादुगुह्यापमिरुनी॥ गृहीत्वास्वकलीस्यहाम्यनकलिम्बासमाहिन॥ सच्छुधाकुसमागम
चयाभमासनानय॥ नलादेवरावतकुर्यादावादिनिर्मितं॥ मथवाधनसाकुर्यायलारुप
वर्द्धन॥ विहनप्रवसममाकूलपंचवृक्षदग॥ पूर्वाकचेवयागनदासीदयंसमानहृन्
तिष्ठकसर्वथायागिनाप्रकार्यविधाना॥ प्रहोपायसगायागननखंदयाकुप्रकने॥ प्र
वनालीगनेवेवसर्वस्वसूक्तमेवच॥ दानपानमिगाप्रहृन्वपवनगीस्य॥ नलनका

यवाकचिह्नं सवृमं गुरु शीत्यम गोलपानमिना ह्यासहनीच नखऊनी ॥ अऊनं पिउ नीचे
 वजाकिपा नमिमादियं ॥ साद नैदिर्घकानकुसुन नैरुथीलमाहिना ॥ वीर्यपा नमिमा ह्याम
 त्तरवचिह्नयाऊये ॥ सर्वभाहव नृप्यमध्या नपा नमिमा मया ॥ श्रीरूपहावना साप्रहापा
 नमिमा प्रकीर्तिना ॥ सुन गेकयोगमाईम प्रहृषद्या नमिमा हव ॥ पंचपा नमिमा प्रस्था
 हानं प्रहृमिकथन ॥ सुन गयाग समाशुकायागि संलाष संहृम ॥ सिद्धकऊनमाईन
 प्रस्थान समन्विता ॥ यथा नगा तसूहृम लुल प्रथी समन्विता ॥ एकऊन च सर्ववाधिसीमा
 नाद्यय संहृम ॥ सप्रयादग हमाश्वहावय सवन गेसय ॥ सकुशुदिमा ह्याविमनाच

चिह्नानि गथा ॥ प्रहाकनिसूर्जया ॥ हि मुखिउ नैगमा ॥ चला साधुमनिधर्ममया समेन प्र
 हाकथा ॥ निरूपसाहान वनिन वययादग संहृया ॥ ॥ सुकनवीनाख्य श्रीचमुम
 हायाय समेन चर्यापटल प्रयादग ॥ १३ ॥ अथ गलि न्यर्षदी समकहृदी नाम वऊया
 गिरुगवकमनदवाव ॥ यत्रिष्टुक्का महेनाथ किमर्थमचल संहृकी ॥ एकनवीना संहा
 वचन्द्र महात्राघा निव ॥ अथ हगवानाह ॥ प्रहापाय समायाग निश्च नं सुख नृपि नै
 प्रहापायाल कै मच्चविना गन नवालिमं ॥ ननेवाचेल माख्या नै वऊ सख सख नृपि नै ॥ दी
 हऊक मुखेगभक सचुमं प्रनिधं मन ॥ खर्गपाग कनस्यानु प्रहालिं गन नस्य नै ॥ सख

क न

पर्यङ्कमासिनं पञ्चचरविहिनं ॥ सा सीसा नीचनिष्ठदिवसो रथन ह् सस्ति नै ॥ न न द
मचलीख्यार्णै सर्ववृद्धसुसविनी ॥ अचलै चै प्रसाधिता सर्वप्रेयदिका जिना ॥ सत्त्वार्थ
हिर्न कुर्या यावदाह न सत्त्ववै ॥ अथ समकह इडवाच ॥ अकान्तमकिमाख्या गं न
कान्तमकिमुच्यते ॥ लकान्तमकिमुच्यतीह गनामसं ग्रह ॥ हगवानाह ॥ अकान्तम
कान्तिर्महज्जखलावरुकी ॥ चकान्तमललमालालिर्न सूनगशुकी ॥ अकान्तम
चम ॥ अहकान्तमस्फुपायक ॥ अथापायकथा गं न न कान्तमस्व न ऊम ॥ सत्रकेक
नवीनकु उव उकल्लक ॥ एन ४ विनागमर्दनदिनख्या न उक न वीनक ४ च छुमिब

४०

न न अशो समहाकाधन ४ एन ॥ नाषमकाधनाह्या सर्वमानविमर्दन ॥ विनागच
नुनामावे महानागमदिमानम ॥ नाषमकाधनसुविनाग उडुमानियो वा
महकनचापर्यङ्कावसुसुं समाहिन ४ इष्टाष्टयुग ४ कूक्षोविनागं च विनागय
नूनयाम्द्रियायागिप्रहामालिग्यनिर्हनी ॥ विनागं सर्वमाहत्वावृद्धसिद्धिमवाप्नु ॥
०० श्रीकनवीनाख्योचमहानाषमं अचलार्थपटलश्चुर्दग ४ ॥ अथ
हगवनीक्षपवजीउवाच ॥ उकनवीन ४ कथं सिद्धमकहिलैपनम्यमन ॥ अथ
गवानाह ॥ अदिखीकानयागनकृष्णचलविहावय ॥ ननलैर्यवलादवधा

गिरुछानर्गस्य **॥** धर्मवाचसंख्यायापाटवानकमववा **॥** गमंवाचसंख्यायां द्वयव
 कादिसंयुगी **॥** मध्यपेचावलानामेष्टहिलेकेविहावयम् **॥** प्रहोतुगत्तुलीनानाकु
 श्रमावाधलावयम् **॥** सिद्धकर्मनयागनयागिगीर्षीनसंगय **॥** प्रहोपानमिनाचा
 धलावयत्सुसमाहिम **॥** लावनावलनिष्यगोवाधिनान्ननवाप्रया **॥** श्रुथहग **॥** ४९
 रगीम्राह **॥** विगुद्धिदवनायाकु **॥** उमिच्छामिनायक **॥** पूर्वाकमधुलानानुविशु
 द्धिमवदप्रहा **॥** श्रुथहगवा **॥** श्रुथमसंप्रवक्षामिविगुद्धिसर्व **॥** अधने **॥**
 प्रवक्तुवउर्वकविहानि **॥** चउद्वानेवउत्संचउत्ताननचउत्थानं **॥** श्रुतीरु

लाभार्थाह **॥** गमार्ग **॥** कपूटेचिनिकायनापमयातिविश्ववर्हविश्वनिर्मातृ
 नवनवा **॥** यप्रवचनामनिर्दिष्टनकं महानागविदिक्पिनस्यामगमदलकप्रानि
 वक्रधेगधऊपीयसुदजानित्वा **॥** चउत्सुर्थाह **॥** गमनिग **॥** खजामध्यकृष्णाचलचि
 द्दी कर्हिविश्ववजापूर्वादिदिक् **॥** यमाचलपदीनां श्रुमादिदिक्माहवजादिना
 निमधुलविशुद्धि लावनाविधिब्रह्म **॥** प्रथमैपूजापूजाप्रत्यकर्मसुहावेविगि
 र्कर्मसुन्यमाहानसुहातोमनसविगिष्टस्वच्छदहा **॥** श्रुक्ताहवदह **॥** क्रमार्गन
 पर्यकउद्धहवसंपमयानिचउत्सुर्थाह **॥** गमनिग **॥** कृष्णिमाउः **॥** पिउनेनोहवचि

कं नं

कं शुक्राखपीनाः मा मकी मागात्र नया न मा नाना ग नं दृष्टापि न निद्वर्ष कृत्वा मा न र्य न
ना गे व मा ह न सर्व चिक स क म न प म्ना निर्ग नः या उ पि नू मा न न त् स द प्रा फ य मा
नू य ह नै ऊ न्मा क न वा कृ त्वा द्वि गि ह्म त्स्वा प ह्मा पि प्र या ऊ न य नि (य मा च ला द य श्च
मा ह व जा द य श्च प्र या श्च पि नू मा न न स न य ना ग उ व य व नि मा व त्वा न य नू उ हि नू
श्च का म य न ऊ न्मा क न वा कृ त्वा ग वि गि ह्म त्स्वा य र व र्ग प्र ह्मा पा ग उ पा य अथ वा पा
ग प्र ह्मा र व क उ पा य उ ह्मा स म न गी क न न र्ज की वा मा ध द ह्म स फ पा मा ल पाल
नै स व्वा द ह्मि ४ स फ व क्ता उ पाल नं वा म ह्म क न जा नू द धि पाल नं स व सै प्र ह्मा न प दं

४२

सर्व माना स नं उ क्ता क्त्वा न गि व क्क ग मा न वि क्क म्म म्मा न ग क्का द व प्र व मा न द
धी स क न म र्क क ल्पा प ह्मा ग ४ क्मा ना दि र्घ ह्मि नि प मा स ना या जि न च न्द्र सूर्या स न उ
क (ग म्नि न ४ प्र नृ ष नृ यै हा व क्ती नृ पं श्रु त्वा व नि ला वि ह्मा नं श्च (य मा नृ यै पी मा व द ना
न क ४ गं ह्मा ग्म म स्का नः म न न्मा न क न ना द नृ यै चिक स नि ना का नं ह ग व नि र्थ ग्मा
सं स्का ना ह व नि र्थ ग्मा त्वा त्वा ना ह व नि स च शि वि ध नृ य का य स क्ता न श्च
स प श्च सो वा क्ता न वि न र्क वि चा नो म न स क्ता न ना ग द य मा ह उ हि नू क्ता श्च क
द धि वी श्रु त्वा क क्क ग्मा श्च या द व त्वा म हि र्वा हि न त्वा ग उ क्ती ष त्वा प नि पा च न त्वा

क. नं

वायु कुंचन प्रसा न स प स सुदि न स व प भ मि सा दि न स सा ल प र्ग नृ प ग न्ध न ग स र्ग नृ प ध
र्म धा उ स मा व नि न न ४ ८ क्रा मु खा हिला ष न न उ पा दा नं न स पा प कं क र्म ध न ग ल व ग र्ग उ
व ग न गी ज नि प्र क नि कि न स ह नि नि ष दि उ पा दा नं पं च क न्ध ला ह न गी ज य पा न नि ला व
म न स चि क चै रु नि ना ध न गी ज ना म न स चि क य न् (भ का कू ला ह व नि मु कि न यान प र्प
षि नो नि प नि द व नि व्या ध य प रु न थ उ ४ खि ह व नि न द व नृ न ४ पु न म न सि नि या रु य
न दो म न सि ह व नि उ र्म ना पि क स प्प प ड न ४ उ पा या सा ह व नि नृ न म र्थ श्र वि आ दि
ष दा य न न प र्प क ना ह व च नि ल मा का गी (य गी ज ले पि न पृ थ्वा न का व कि ग्ध मा वा

४३

न य (थ ह ग व ना य थ ह ग व नी नां मृ थ वा नि ल स वि गु द्र ध र्म धा उ ह्वा ने (य गी ज द ग
ह्वा ने पी न स म का ह्वा ने न कं प्र स थ उ स ह्वा ने स्या म रु स्या नृ ह्वा न ह्वा ने उ क उ वी जि न ग
ह्वा पं च नृ प्प म सं ह्मि ना प्र हा पा न मि ना चै का पं च नृ प्प म सं ह्मि नाः ॥ १० ॥ क न वी ना
र व न कु वि गु द्रि प ह ल पं च द ग म ४ १ ॥ मृ थ ह ग व नी आ ह क थ मृ थ य न लो क ४ क थ
जा नि ऊ यं पु न क थं ह व सि दि कृ हि लं प न म थ नीं ह ग वा ना ह श्र वि या प्र स या सं स्का
ना सं स्का न प्र स यं वि हं वि ह्वा न प्र स यं ना म नृ पं स र्ग न प्र स यं ष ज य न नं ष ज य न न
प्र स यं स र्ग ४ स र्ग प्र स यं व द ना व द ना प्र स या नृ क्रा नृ क्रा प्र स या उ पा दा ना नृ पा दा न

पश्ययाहवाहवपुष्याकागीकानिपुष्याकाजीमनसः। गि कपनिदवदुःखदोर्मनस्या
 पायासा उवंमस्यकवनस्यमहमादुःखस्कन्धस्यसमुदयाहवनि॥ उवंमविद्यानिना
 धनसंस्कारंनिनाधद्विहानंनिनाधनामनूपैनिनाधः नामनूपनिनाधः पूजाजि
 नाधः पूजाजिनाधाउपादाननिनाधउपादाननिनाधहवनिनाधहवनिना
 धार्जनिनिनाधः जागिनिनाधः ऊनामनसनिनाधऊनामनसनिनाधः गि
 कपनिदवदुःखदोर्मनस्यापायासातिनूधम॥ उवंमस्यकवलस्यदुःखस्कन्ध
 स्यनिनाधहवनिपुष्यस्यमलाकः प्रमिलेवनिनूधमदुःखानूपैद्वयचेनद

दयंरावसिध्वनिः अथहगवनिउवाच॥ कथयतुहगवानश्रविद्यादिवदनं॥ अथहग
 वानाहः प्रिपनिषर्कमिदंचक्रंश्रुतिगादिप्रहृदिमठद्वादशकानमारव्यामधर्मसर्व
 जिनेनिहः ग्याविद्याहयापादयाहानंमनसमनकनवन्धनूपैचिहगनिनाकानह
 वनिस्यर्थः॥ नस्मात्संस्काराहवनिमचप्रिविधः नपकायसंस्काराश्चैतत्प्रथमो
 वाकसंस्काराविनर्कविवाभो॥ मनसंस्कारागद्वयमाहाउहीयुक्ताश्रविद्याश्च
 निषवसुगिविर्कपनिहलंगुकागिविचानयनि॥ अमंशुकागिअनूनकाहवनिदि
 द्वाश्रुवाश्च॥ नस्माद्विहानंहवनिपुष्यकानचक्रविहानंघामविहानजिह्वाविहान

क. १

नैकायविहानमनाविहानंचउहिर्गुणःविद्यापगन्धिः॥१॥
त्यनिगसोनामत्रुपेनामंचत्वात्रावेदनादयत्रुपंत्रुपम्यच॥
यीत्वानामत्रुप्यसूकी॥उपादानंपंचस्कन्धत्रुपमविद्यापनिधमनिमर्थः॥
विधशुना४३४खासखाचमिहंहावकिनास्वत्रुपग्रहनाकलाहिलाष४सस्कात्रसा
मान्यविशेषावत्ताअहिनंविहनेगाविहानानिपूर्वाकायवचउहनात्मकं॥
उनत्वकस्तनत्वंश्रायाववत्वमहिस्यदिनत्वं॥नऊष्टत्वंपनिपाचत्वंवाश्रुनाऊंच
नप्रणनमलघूतमृदिननत्वं॥नस्मादपयचनानिचक्रयमग्राभजिहाकायम

४५

नीसिउहिर्गुणःपूर्ववत्पगन्धित्यादि॥नस्मात्सर्गःत्रुपगदगन्धनससर्गधर्मधुसमा
पदिः॥नगदृक्काश्रुखाहिलाषमइपादानंनस्यापकंकर्माग्राहवागर्हषवग४॥नगाका
किप्रकाटिकनभहनिनिष्यदिउपादानपंचस्कन्धलाहगनाऊयनागनिहावमनमचि
हंवेननिनाध॥नगाऊनामनमविहयनभकाऊलाहवनि॥श्रुकिमयानप्रवगि
ननिपनिदधनिवाधाइपदवग४३४खिहवनिनगदेवप्रन४प्रनर्मनसिनिथा
ऊयनूशेर्मनसिहवनि॥मनापिकनाश्रुपदवगउपायासिहवनि॥श्रुयमर्थः॥श्रुवि
याषजायननंपर्यनगाहवेत्ताखउकईवलिग॥॥लोवपगधनपगधकिपीप्रुषा

क नं

ननुनकान। नमाश्रुतिनजागिहकनकर्मस्यप्रविनायजागोवृत्तनाहविष्यति। नजागिधि
पुन्रुषोनमाहृष्टाः निवन्स्यतयासर्गउत्पन्नं ननुयसिपुन्रुषाहविष्यति। नदाश्रा
त्मानं पुन्रुषाकात्रपग्धकि। हविमागनिपत्रमान्नजाहवकिलवयिननिचमहाप
विष्ट। नागदधोचसुखउ४खवेदनेनन४ कनाकात्रनानयासाह्वनिकनामिनिवि
कथन॥ अउ४खाश्रुसुखावेदनागयाव्यासुखहवमि। नन४ पूर्वक्रमवानप्रनिगाहा
नृका३मात्रमामिनिहृत्वाकष्टनकाहिपुन्रुषोममक्रियंकामयन॥ हृनिहृत्वागा
नाहृक्रमनवहाविपिगुगिनामार्गनप्रविशमस्यगुक्ताधिष्ठिनविनश्रुधिस्थाद

४६

हविमागनंकामयन्नात्मानपग्धमिसुखाननमुपादयामि। ननगुक्तात्रमनसिहृयम
हनागननागनावधुनिनावापिगुजानिगस्यमाउ४॥ पप्रसुसिनरुवजधश्रु
निनाप्रकुकाऊननायाहृन४ऊननाकचिकवकनाहवाहवमि। सवक्रमसकल
लाववृद्धयनयगिगभखायनानवहिर्दग्गहीर्वानाहृयनेवमार्गगप्रविष्ट४ ननेवमा
र्गननिर्गनाजागिहवमियदिवाक्रिहविष्यति। नदाहविनयसनाल्लहवमि। हा
विनयागनिवदवा४ ननशास्त्राश्रीनूपेयग्धकिहविमागुगिनामार्गसप्रविशप
मयमित्वाहृश्रुमिश्रीहृयगसा३वऊनयानिष्टकिनपूर्ववनिर्गच्छकि। जायन

क. १

नयवमविद्यादिहिलाकाकायकलाकायपश्चस्कंधा॥७॥ वंनवडुःखसैहानिनः पंचस्कंधा
नवडुःखनकायमहिमाकार्थानांश्रुविद्यादिनिनाधस्कंधाहावशुमगाकचुगानचकुचं
नकायैमाकार्थिनः नस्मान्नहाविभाजानाप्यहावः नस्माहावाहावविनहिर्गेषहापायग
नीमहास्रवश्रुपिनीश्रीमपवननाथलकैचउनानन्यैकशूर्तिविहंणवनिर्मसिंश्रुति
हिर्गैमाऊनागभस्वयनलाकानागऊयाल्लुयैगगश्रुवलापनिहनाब्रह्मसिद्धिः स
श्रुद्यमि॥ नवनमिषहासगस्रवनस्रुदिर्गैकुयविर्गैविधुननविधुमस्रुमानकदच
प्रसहयाचकथिनी॥ ॥०॥ कनवीनाख्योचउमहाप्रापगगकुप्रमिषस्रुला

दपटलः षोडशः ॥ १६ ॥ अथरुगवनीआह॥ नाथदेसैप्रमैशुक्तीनकलीगरुगलन॥ प
वृद्धगवकनकडुव्याधिवृद्धत्वनागनाग॥ श्रीमनावगधनाहावाकदध्वाकलगादपि॥ ७
कसकैहनडकडावनाकहियागकी॥ रुगवानाह॥ साधुसाधुक्रमैदवीयदहंश्रुधधि
गल्लया॥ वऊमानाविन्धनचश्रुगुलाकार्थसिद्धय॥ गनीनैसाधयदादोपश्चस्कर्मस
मानरुग॥ शुक्लवक्रुगल्लैल्लुश्रुगल्लिर्गैरुवक्॥ विहलाकाथमागृकप्रवकाली
पलागकी॥ पलागवीजंअथमंकिविहऊयिलोउउपासंहेनिजिह्वयस्रुनी॥ कनका
यसामगालस्रुगैलैहिलमावीलस्रुगैधवपील्लालिह्याचनडोदंश्रुकानागवप्रह

क. नं

ना कनकाश्चनसंकेलेपिवधवनसंयुगे। मोडाहमधयागनहवधवनस्य नागने हि
नमाचीनसुकिचिन्सेधवधवनसंयुगे। कायायाचलिर्नकृत्वाहवपिडस्य नागने क
नकाश्चनसंकेलाकृवमूलैव। अभययुग। पानयागं हवकेलनागयवनगंसयधनसं
कृष्णां उमकायापिवधवनसंयुगे। बुधना। गहवधनाग। श्यानां मधुगस्य न० ७
केकेदिदिने कृत्वा त्रयशेषधनानहृत्। ननेवहलदकश्चनिलुनंचानधप्रिय। ग
ललीवल्ललंच। रुफं मधुनहृत्। सुफधमकिर्नकृत्वा शानवाहाजनक। ध
शहेयावजीवकुशुक। गतिनवर्द्धने। उंच० महानाघमदिव्यामृते मकृत्वा रुद्रं स

४८

तिनेनानिकलेश्वरनवनीनंचापिमाहिषं। वास्यमन्दनसंरुक्तं मदसूक्तनसंहवे लिंग
कलुनानातुहगस्यापिविमर्दने। सर्वकायविमर्दश्चवर्द्धकं ननगंसयध। निनवाग
ऊनीकृत्वा यज्यीत्वा च नवे। यानिमध्यहविंऊप्यहा। रुप्यन्धवर्द्धने। उदिसस्यत्
चकर्त्तः पयस्यपनेलके। कृतं मर्दिनं वर्द्धनश्रीनि कथनगस्यग। श्वनसर्वपवसा
मृधेगन्धहनिहृते। कल्लेमर्दयल्लिंगं कृतकलुश्चवर्द्धनं। हलिपिपली। श्वेनाप
नजिनाकृते कथं। माहिष्यसवनीनमर्दनील्लिंगवर्द्धनं। श्वानकउमाहिनीमाहि
ष्यनवनीनैलेपनाल्लिंगवर्द्धनं। धनुनसुन। श्वगन्धमूलं पिल्ला माहिष्यनवनिर्गमिथि

क. नै

नैः धउ नहल काउ नश्रु हा नायं स्थापयन् ॥ नगालिग माहिष सुकृता दृढं मदीयि स्वा
वीकून नायि प्रयलि ह्या मदीय द्वर्धयन् ॥ ॐ नः (ग) पच (धु) न न क (ग) हा ल या घृ नै ॥ साध
येत्वा माहिषं या न त्यक्त न ल प य ग ॥ गिथि ना या नि ग रु ह व नि ॥ पश्वी ऊ उ ल ल वी
ऊ मृ धा न उ गी नी मू क को किल को किल नै लं पा च य न ॥ न न ह ग म ल य ऊ दोग न्धा (ग) धि
लं वे ष मां न ला दिकं ना ग य नि ॥ नि म्ब ल क का (ध) न ह ग प्र ऊ ल य ॥ नि म्ब ल चा धूप
ये च सो कू मा र्ग्य स ग न्धि स ह ग दि गु (ध) य नै ह व नि ॥ ह नि ना न ह (ग) प च ३ किं उ क का
न रा गि क ॥ य व ऊ न रा (गै) कं उ नि जा न रा (गै) कं ऊ ल न पि ला ल प मा ३ म ह ग क ऊ लि

४९

गनां नामान्साटयनि ॥ नगाहलाहल सर्वश्च च्छुमिथिनी ॥ कडुनेली सफाहलापिने
ननलिगदिक अऊयन् ॥ न पुनः कगः प्राउर्ह व नि म हि ष सु क न ह कि कू र्क ट (ध) द नै
ला ली म र्द ना लू ना दि ना वृ द्धि जा नि प्र ष्यं नी ल नं पि ला ह ग मू र्ध र्ध य न ॥ उ च्छु सि नै ह ग
व नि मा हि ष न व नि न व ना कू ट व ली ना ग व ला हि म र्द ना लू न वृ द्धि ॥ न का द कं प्र ऊ ल
ना द र्दि रु लिं ग स ट ग ह व नि ॥ द (ध) ल य ना मू ली ग व य घृ नं न पि व उ न नु का ल गु र्दि नी
ह व नि ॥ मृ श्व ग धु मू ल घृ नं न पि व न्ग र्ह मी ह व नि ॥ व ला मि व ला गि न ग क ना मि त
मा जि कं म धू र्क पि व न्ग ॥ ग र्ह मी ह व नि वा ला मू ल उ द कं न पि ला पि व न क उ वा ह

नागयनि यवचूर्णम् मृषं सर्जनस्यक्तिमधुघर्णे नाद्रिं नाल्लवंगमं हृदं हवागि ॥
 नाहकाकामूलैश्च उकालैक (हृदं च नो गुर्विती हवागि ॥ कयविगमं कं हृदयत्सुकव
 दिः ॥ नधुनदधिरुं न न हृदयद्विगुं कं लमिहृदयं कं हृदयः ॥ श्रीगुर्थं श्री
 धम (म नयित्वा पिवं गुरुं हृदयः ॥ म न कीर्त्तुं गलनं घृणनं मधुना वा विवाले ॥ ७० ॥
 श्रवलिहृदं ॥ चक्रघना नृम्य हवनि ॥ यहा वरुनया के म न का च ॥ उमिचूर्णं स नैयु
 न मधुना हृदयं ॥ ग (ये वरुलै (यो न व न धुला मूलैश्च गन्धमि न यवान गुठन
 समन धातुं हृदयं ॥ यो व नैज नयमि ॥ मृज न त्व इ उ उ म्मि ना हृदयं ॥ व

र्षप्रयाग नयिगनायुः ॥ म न की न स पलेकं वा कृचि कुरु कर्षपिवत्ता म्मी र्मी ल
 हाऊने मा (गे न पंच ग नायुः ॥ वा कलि कर्षं कं न कुरु म्मल न काजिक न उ (ध न वा पिव न
 पत्मा स न यो व ना कृष्यु ॥ मृधुनी चूर्णं घृणनं हृदयं कि ग फा ह न द्वि न हृदयं कृनिः
 स न विज चूर्णं पलेकं न क ग मि पलेकं उ क व र्णं म वि क न म ग ना व र्ध य न न न्ध य म
 थ म की न म ग ना व म कं क यं नीत्वा स नादिकी ॥ क य दत्ता पथ म न मा हृदयं ॥ श्री हृदः
 (ध न हाऊ य न वा मा क य र्जि न ॥ स फा ह य यं या व न य थ क्रिया कृ (थ म न क्रिया ॥ न
 क ४ कृ (म दय ४ प मं नि पु न नृ क्रि य मि ॥ क ना वलि पलि न न हि ना जि व मि ग न मृ यं वा

क. नी.

नकाच्च नमूलं घनमधुना विज उपमा प्रहजयेत् न धेव हूलं मम न किह नि किह ग
माऊ पिपली मली च लाह च धनि मधुना गक नासा उडु म न हूल प्रमान ग के का ऊ य
म क मा गु टि के का ह ऊ य म मा स न विग ना मू ३ क मा नि हूल म कं घु म द धि रू के ह ऊ य
म ग फा ह न विग ना म ७ वी के ना य ग ध ना ग व ला नी ला न वि गु न गु ड न ह ऊ य म न ह
व ला ह व मि ह डाली गु धु कं वि गु लं ह वि न का ७ कं ऊ ला दि ना ह ऊ य म हा व ल सा म
स र्व मा ला ने द व मा का ने म य न न कु म चो ष धी मा धि रू ॥ ॥ ॥ ॥ क न वी ना र वी
च न्न म हा नी ष म न कु गु रू व दि प ट ल स फा द ग म ॥ ११ ॥ मू थ ह ग व नी मा हा ७ म थ

७१

मूलं काजिक नपित्तागिना मर्दयन् गिन सूलं विनग्धमि ॥ छाग सारग न न स वा का डु म
उं स से ध वी क ध पू न य न् कै थ ना ग ना ग सूलं म क ट के ली वा द या न् क ट कं पि प ली म
ल की ह नि न की व चा गि गि न स व नि का का न य न् क ना ऊ ना च क ना ग ना ग कांजिक न
ने ल से ध वं ड वी मूलै क ल नि द का ऊ य न् च कू शू न ना ग पा ष क हूल घी ला क को ल म
ले नी पू ला द क म धि व ल स च द या न् का म ल ना ग २ ॥ म न क क न वा न स जा दि म प्र ष न
स म ल यि ला न स द या न् ना ति क या न कं न य व नि ॥ का ह्ना डु म न मूलै ग धू ला द क न
मू र व दान स न कं न य व नि ॥ स ह्ना लि का मूलै च व ना ह ल ध धी वि न ग्ध मि ॥ गुं ऊ मूल म

क. १

दककीटविनागः ॥ गायत्रंगवाः श्वंकर्कषपदं पञ्च ॥ पादगमकः ॥ दककटकटिनगधनि
मूलकवीजं प्रियं च न कचन न कुष्ठं पृष्ठादूर्ध्वं नालकयादि नगधनि ॥ हलिनमाहं शुक्लं
कागिजीवमपि वलनमकं ऊयनागनागः ॥ माहिषदधिहकः ॥ ऊवादिभिर्गमनागः ॥
श्रमूहकासमानधः ॥ कटजवकनलगद्वयं मनीचः ॥ शुष्णिनामकः ॥ हागवागं कर्कष
धम् ॥ ग्रहनिनागः ॥ श्रमलकीपिप्लीचिप्रकमदकं प्रनाटनशुठं घृमेमधुनसमं वा
हजयम् ॥ गधसोलाजनमूलैर्कार्थवापिवद् ॥ श्रमनीनागयमिहनिगकिचिप्रकं
श्रुदं च मलनापिवद् ॥ श्रीहनागनः ॥ जीनकीशुठनहजयजनावागोविनगधनि ॥ यव

३२

जानदग्धधपिवद् ॥ आशवातनागनी ॥ कडुयमं विडिंगसेधवंदस्त्रामलका मुपिवद् ॥ रूष
इष्टं श्रमिदिवमिहमिथाविनगधनिहनीगकीशुठनहजयम् ॥ दुर्गमाविनगधनि ॥ हनिग
किशुष्टहजयम् ॥ श्रमवातनागः ॥ उर्वहनिद्रायापिस्त्रालयनाकचुनागः ॥ श्रमवदकविस्त्र
यादि कर्कषनड्यायादिनागयम् ॥ कागमदकं मूलैर्काजिकनपिल्लानधः ॥ उदकडुनेलन
पिवद् ॥ स्वासाविनसक्तिः ॥ मूर्धनत्वचपृष्ठादिहहजयम् ॥ हयवाधनागनी ॥ निनादग्ध
शुठनहजयम् ॥ नकागिसाननागः ॥ मातुवृंगजसंशुठनहजयमशूलं नागयमि ॥ शुठस्त्र
ष्टिना नगधं दद्यात् ॥ वीरस्य नागनीकटकं मधुनाजयम् ॥ सर्वादिनागनागकाजिकन

नेलसेधवडुर्वामूलककभनिघृष्यत्वाङ्गयच्चक्रननागशुभमनहकयग्वामपि
 (सिष्ठाकृष्णादयाविनग्धमि) **हृल्लाचूर्ण** घननाहकयत्सर्वभागनाग **हृनिमकीचूर्ण**
 हृघ्नमधुनाविनालश्रुवलिहन्वाग (सिष्ठाविनागनौ) पागकपंचागवच्चात्रिपि
 प्लीगुल्लचूर्ण **हृल्लाचूर्ण** सधवनमधुनाचवरिकुर्यात् **नगाहकय** द्विकागवान (सिष्ठा
 विनग्धमिवनेचमधुनेकगामित्रकावद्याशुपिपिप्लीहनिमकीवासुकीखदिमंच
 मधुनापमिकी **हृकयग्वाम** (येवहृल्लेयमानीशुंधीहनिमकीसेधवानामाहकयग्व
 गवाकिहृनाग **शुभविनसंमधुनापिवग्** **प्रमहाना** (गमासयनइशुपिप्ली

चूर्ण घ्नमधुरिपिवग्गलहृदागनागदयानग्धमि **लज्जालग** नप्रखयामूलेवासा
 दकनपित्वालेपयग् **शुभविमूल** चहृकयग्व **नालिवन** नागनिशुभियवजानह
 हृकग **ब्रह्माहवमि** **कयनीम** नीवनपिवदिनपापनागनास **पिहृल्ला** नलि
 काकृष्णमृत्तिकाहृगनाजीसहकानाथविजंलाहचूर्णकाजिकी **गृहिका** ननकं **कुर्या**
 कगा **मूलक** नकंगधूपयित्वा **नमर्दयग्** **नग** **सफाहं** वध्वाहृापयग् **कग**
 लीजनंमधुनपिहृहृगनाजनतायांगवाघ्नपक्कानगमन्द्यात्सफाहृकगनीजन
 प्रहृनवन **मुयाकाथ** कुर्यात्सा **उग** **गुन** नजलनहृ (गकं **हृापयग्** **नगा** **मल** वि

क. न.

स्वाध्यायः शुक्राचरुर्हृदयाकनकेलसनाधमकं नभयम् ॥ अत्रनेवकमस्यगामकमत्रने
न ॥ हृमिविदालीपिकुङ्कुमगन्धकंसमरुर्हृदयावर्तिका मध्यकलाकलदधधुर्ववर्ति
काक्रमनककुनैलेशुघसमनीविनुद्वयनगधनवलिपलिगविवर्जितः ॥ ७ ॥ अत्रम
दिनत्रस्यनकुलनपमकिहवने ॥ सध्यानवनीनमदिनगंधमासकासहिननसगा
लामकंसा नीवि ॥ लनपापि ॥ ८ ॥ नद्यटयकुनघयस्यकनमपिकापिहिमंनवालुकोर
हिमनवक्रिदानाडसवध ॥ हकमकुयादिनाग ॥ ९ ॥ गवत्सस्यप्रथमपिष्ठागृहीत्वा
क्रीडिकांकात्रयम् ॥ पिठनानमूलं पिष्ठा ॥ १० ॥ कीकुडिकं हजयित्वा विषहजयम् ॥

३४

नप्रमिहवमि ॥ ऊतवीजं वीजपूतकैवीजगिनीषवीजं चरुयित्वा अजाकीनेमपाय
गत्रनभयम् ॥ घननहजयम् ॥ यऊकंपादुऊनहवमि ॥ अमलकीकुरुमूलनमा
सीवना ॥ ११ ॥ लपनवित्वा ॥ कगप्रनास्रुर्हृदकमकुधुमनदध्याइधघनान्विनेह
त्वा मऊयम् ॥ १२ ॥ उजापिकगमउमिष्ठानि ॥ नदिकलजलप्रवृषद्वियंकमिययऊधंरुपां
यित्वा ॥ १३ ॥ गुमगुमकंदया ॥ प्रवृषव्याधिनगधमि ॥ हंगनाऊं पिष्ठा लपयमथा ॥
॥ १४ ॥ कनवीनाखशीचन्द्रमहानाषमनकुव्याधिरुहलहानिपटला ॥ ह्रादगपटल ॥ १५ ॥
अथहगवानाह ॥ १६ ॥ धनापनाजिनंमूलंशुक्रधवमिकांरुत्तानिकं वगाहवमिष्ठा

१०

क. गं

ब्रह्मदक्षीववाकुकुमधुनालिंगमुदकीश्रीयंकांमयदगीहवनि॥६॥अथनामूलकृष्टं
गीवालनदशार्थ॥ब्रह्मदक्षुविदगववाकुकुष्टनागकगनेनामूलनदशार्थवभहवनि
गउहशुक्रंकमलकगनपित्वाधुलपयित्वाकामयदभहवनि॥मुदगनगिशुनानां
खदिनकिलनशीवांविदानयित्वाशुक्रंहंगनाऊ॥अशोचनाल्योपुष्यावनिकंकुलानि
नकनवगीकनने॥॥अशोचनासयमूकसुमहाप्यनिलकगवगीकनने॥हंगना
ऊमूलमात्मशुक्रंनानथ॥॥अशकनवीनलगांकनासुनकनयुक्तयन्॥अशमनधुम
यित्वाश्रियनादभहवनि॥मधुनगिराकाकजिह्वामृदस्यनिर्मलंशुक्रचूर्णयत्

55

गिनसिदीयनसर्वसाहाय्यकि॥ गदकहनिमालनविगेनकाकविष्ठापित्वाखान
पानदद्यादगीहवनि॥ विष्काकाशूलनलीगलिह्वानमनाशुथप्रष्यनऊधुनधरु
नसरुलेसंयहृ॥ अश्लषनऊधुनवल्कलहृनपञ्चिप्रमाशुषीशूलनमूलीसुम
लगचूर्णमधुनावटिकांशुय्यान्कपणवहा॥ अश्लषनमाशुलदद्यागखचूर्णन
वगीकननी॥ उन्मरुद्रुद्रुनस्यदकि॥ पादागुल्फाभकांशुनयस्यानामलिख्यनशुम्
कीश्रायन्वीनि संश्रागचूर्णिनिद्वना॥ अश्लषनमाशुलदद्यागखचूर्णन
पानदद्यादगीकन॥ अश्लषनमाशुलीप्रष्यनासाधाकपटं संयऊनलनलननक

क. नी

पालकशूलपादनाननाऊनाश्रीप्रववगकनामि। **द**। **अ**। **ख**। **ल**। **मूल**। **पंचोग**। **मूल**। **न**। **द**।
शादसमानयमि। **वि**। **डि**। **गं**। **ग**। **न**। **क**। **छं**। **म**। **दि**। **न**। **या**। **द**। **या**। **द**। **नि**। **को**। **ना**। **म**। **य**। **मि**। **म**। **न**। **गि**। **ला**। **ना**।
गयप्रवृत्तिनियंशुगमनीचनारिन्नकिञ्चुयुगवगकनधं **क**। **सु**। **न**। **ल**। **जा**। **धु**। **न**। **स**। **ह**। **द**।
वाहिकगमिलकेधेलाकवसमानयमि। **उं**। **च**। **ल**। **चि**। **रु**। **चिलि**। **र**। **च**। **ल**। **र**। **च**। **न**। **ग**। **मु**। **ध**। **र**। **स्वा**।
हा। **च**। **नि**। **ग**। **स**। **न**। **क**। **क**। **न**। **वी**। **न**। **स**। **इ**। **ह**। **न**। **स**। **का**। **पा**। **स**। **ह**। **य**। **म**। **के**। **ऊ**। **य**। **ग**। **ना**। **म**। **वि**। **द**। **हि**। **क**। **न**। **य**।
सा। **४**। **पू**। **न**। **ग**। **म**। **रु**। **प**। **०**। **ना**। **म**। **ह**। **वा**। **वि**। **दा**। **ह**। **म**। **ग**। **सा**। **व**। **सा**। **ह**। **व**। **गि**। **स**। **र्व**। **स**। **वा**। **प**। **ग**। **म**। **ह**। **य**।
नि। **ना**। **म**। **नि**। **हि**। **नी**। **ह**। **त्वा**। **॥** **न**। **म**। **४**। **च**। **अ**। **लि**। **म**। **सु**। **की**। **भ**। **व**। **ग**। **क**। **न**। **२**। **स्वा**। **हा**। **॥** **स**। **र्व**। **पू**। **नी**। **म**। **ग**। **न**।

७७

हसकप्रचउनसाप्रधाननगगाहिमक्तिमहत्वाश्रीगिनसिदयावगीहवगि। **अ**। **ऊ**। **स**।
लि। **ग**। **मा**। **दा**। **य**। **क**। **या**। **म**। **ग**। **न**। **स**। **स**। **य**। **के**। **क**। **न**। **ग**। **सा**। **थ**। **वा**। **प्र**। **चं**। **व**। **ध**। **य**। **गु**। **क**। **क**। **ह**। **ने**। **स**। **त्त**।
खे। **क**। **म**। **ना**। **॥** **क**। **र्या**। **भे**। **थु**। **न**। **धे**। **र्य**। **या**। **ग**। **म**। **४**। **वि**। **धे**। **स**। **व**। **त्त**। **दा**। **ह**। **त्वा**। **गु**। **क**। **क**। **ह**। **ने**। **मू**। **रु**। **मै**। **मू**। **गि**।
ग। **का**। **कि**। **ला**। **व्य**। **स**। **ध**। **रु**। **न**। **सा**। **थ**। **वा**। **रु**। **नं**। **॥** **मू**। **क**। **क**। **क**। **गि**। **दा**। **ह**। **स**। **व**। **रु**। **न**। **गु**। **क**। **क**। **ह**। **ने**। **रु**। **प्र**।
मा। **ऊ**। **नि**। **दा**। **न**। **पा**। **दा**। **हि**। **वं**। **ध**। **ना**। **त्त**। **क**। **क**। **ह**। **ने**। **॥** **धे**। **क**। **ग**। **न**। **य**। **वा**। **मूलं**। **च**। **वं**। **ध**। **य**। **गु**। **क**। **क**। **ह**। **ने**।
ने। **॥** **स**। **न**। **सु**। **नं**। **ग**। **म**। **मूलं**। **य**। **दि**। **क**। **गु**। **न**। **गु**। **न**। **कं**। **ह**। **क**। **य**। **गु**। **भे**। **थु**। **ना**। **सु**। **र्व**। **व**। **गु**। **क**। **क**। **ह**। **ने**। **मू**। **रु**।
मी। **क**। **न**। **ऊ**। **का**। **न**। **यि**। **ला**। **पा**। **न**। **द**। **न**। **प**। **पू**। **न**। **य**। **ग**। **व**। **ध**। **ना**। **क**। **यै**। **सु**। **यै**। **॥** **गु**। **क**। **स**। **ध**। **न**। **॥** **ग**। **रु**। **मै**।

क. १

सुकुनेलननाकानंजिनयनाकउनवयोपदीपठानयन॥सुकुहृनंरुमिननाचूर्ध्व
मध्यवर्द्धिनिलनेलनवाहयगुक्कहृनी॥हमिलनाचूर्ध्वरुमिनिलनेलीकसूम
नेलन्यापयन॥ननपादनलयकुयनगुक्कहृनं॥मधुकवगभककटवगभकागड
ग्यमावर्द्धयकनपादोयकुमसुकुहृनी॥हिनकाकजंघामूलसिनपयकगवम
धुहिनारिलपागसुकुहृनी॥विष्णुकाकामूलपयपयमवययित्वाकथोवन्धयन
सुकुहृनी॥हनिगाननसाऊनपानदपिप्यलिसेन्धवहृकपात्रावमविह्वलिसा
लिंगउर्द्धकानागुक्कहृनी॥उर्द्धवलीवर्द्धशृगंशृकनिघृप्यलिंगलययन॥उर्द्ध

५१

लिंगहवमि॥कपिकच्छुनदविर्वक्कागमृधनपित्वालिंगसलियसमयात्वाकयवा
नययसुधहवमि॥कफादकप्रजाननागभकि॥कपयसुधककपात्रदप्रनयित्वामुख
कापयन॥सुकुहृनी॥कागमृधनवृद्धवात्रलीगभनखककटिसफाहंवात्रवकना
वर्द्धनासुहृवमिलिंगंउपधीमूलकानाविमूलधृनवीजंकप्रनजलनपित्वालि
गलेपयित्वाक्रियकामयन॥उवमि॥सेधवयंगनकप्रनधाषकचूर्ध्वमधुनापिह्वलि
गलेपांनथा॥पात्रावमप्रनिषमधुनापित्वालिंगप्रक्रियकामयन॥ऊनगकुीकामाचि
मूलकामूलनसुनगऊलक्रियहंआपयन॥ऊनगिसापकनिमिठीलसिकासेन्धवनमि

कै.क.

[illegible]

ॐ शुभमिच्छामि नमः कुरु हलं विहा वायुयागम गायत्र्यं नमः कुरु हलं विहा
यं यस्मिन् सादं कुरु मयः ॥ अथ हगवानाह साधुसाधु कर्तुं दवियस्त्वया ध्वषिना २ गृहि
अथ गसं प्रवक्ष्यामि सर्वविद्या न सं चय ॐ कालाकलालवदनहस २ हलाहलवर्जस
वर्जस २ नरसुतनय २ सर्वभयवा न वृष्टिस्तु २ सुटय २ यै ३ सर्वपा नीये २ गायय २
रुद्र २ गलकुं कपनाका गीका धट्टा सुवला कय न ॥ वामभयादिना गयनि ॐ रुद्रा
नरु २ रुद्र २ हा २ रुद्र २ गमनकी ३ नमः ॐ सर्वविद्याधिप नय नरुं प्रमेष नागय
सर्वजकिनी जागय २ वध २ मुखं कीलय २ रुद्र ॥ इति नगनकुं प्रवर्गनमस्तु ॐ

क. १

[illegible]

३९

मदन १११११११११ नचउनेगुलेगुलप्ररुलिरुखाहर्ऊरुनिगालनलिखित्वा मस्यमुख
प्रकीर्णकीलयम् ॥ चतुपथनियममन्त्रवादिमुखकीलयम् ॥ ॐ सर्वमानप्रहंजनश्रमक
सुपादोकीलयम् ॥ पूर्ववद्दृश्यप्रकीर्णपादोकीलयम् नगगमिमगमिहंलयम्
ॐ विरुगाननपनवनहंजनकलय २ कलय २ चक्रपागनश्रमकसंगेयबंध २ कलय
खगहा ३ ही ३ रुं २ चक्षुमहानाषमकं कलय ॥ पूर्ववत्प्रकीर्णसनापमिबहं गमिनी
लयनच १ काल ॥ मुखिरुखानिषनसुनसंन्यागमनकलयमि ॥ ॐ दह २ पच २ मथ २
कन २ कालय २ ॥ ध्वजयष्टक २ जन २ ॐ चक्षुमहानाषमकं कलय ॥ लगानवकवि

षनाजिकयाहीगुनुप्रमानदवदइमहिलिखमातामरुनवेष्टयित्वा मदनप्रहृष्टिकां
 हृदिप्रक्षिप्यश्रुहिकाष्टमध्यप्रक्षिप्यन् ॥ नमोऽं चक्षुमहानाघमश्रुमूर्केरुलनगुक्ताप
 यरुंरुद्रदिगीधनममनाऽश्लोनायये ॥ खदिनवचनाऽश्लोवागश्रुजालयमि ॥ उं ऊ
 यत्नोऽयनिर्जिगीयकुही २ हा २ स्तोत्रय २ छादय २ गिष्मकर्म २ २ उं चक्षुमहाना
 यमरुंरुद्र ॥ लग्ननकयटलिखित्वा नीलसूत्रं वदष्टयित्वा वाहो क ॥ मुसिमसिके ॥
 ॥ श्लोवाधनयत्नयं नहवनि ॥ उं चक्षुमहानाघमश्रुहृ २ ख २ स्तोत्र २ गिष्म २ म
 न २ मानय २ श्रुमूर्केरुंरुद्र ॥ लग्ननश्रु ॥ धाश्रुविष्मनिखल ॥ सफाहनमानय

मि ॥ उं चक्षुमहानाघमश्रुमूर्कनुचानयरुंनिम्ललकाकवाहं गृहीत्वा लग्ननाग्निनां
 दाहयन् ॥ गहस्ताष्टाश्रुनगनाहिगते मन्त्रिनेष्टहपटलचप्रक्षिप्यन् ॥ इष्टाश्रुं चाचने
 मपाणेन चन्द्रादक्षिणादिर्गनियमानध्यायागुच्छानयनि ॥ उं दृष ॥ दृषववउं श्रु
 कं श्रुमूर्कनविद्वषयं उं चक्षुमहानाघमरुंरुद्र ॥ पृथ्वमानं कुं नयाइलिगृहीत्वा सा
 धपमिहृतिदयं हन्यान् ॥ मन्त्रानां विद्वषयनि ॥ उं चक्षुमहानाघमश्रुं किंक्रां धानश्रुयव
 न् २ प्रचट २ हन २ घाटय २ कह २ प्रहृ २ प्रहृ २ किलय २ जं हय २ रूय २ श्रु
 कं रूय ॥ रूय ॥ रूय ॥ मस मालिखपानकनपउं गुलं च ३ ४ पादश्रुकिंक्रां नं श्रीं क्रो नं मुख

कं. १

मध्यमः गर्हद्विष्टा कर्णालिरव्यसाधकं न स पृष्ठमः पनमालामकु ननित्रिजिष्णु गा
उयदामपादनमृ नृकै भवसमानय सफवाना नृकृ नृवै लै हयनि ॥ उं चिलिमिलिल
लिगं रू रू ॥ चक्रु रे काप नै न पयमि ॥ उं कृं कृं कृं गधय २ धा न वंध २ उं च सुम
हा ना प म रू रू ॥ गवाहि किलकै सफा उल प्रमान म द्वा कृ न ग नै हि नै वि नै (ग) हति
षन नृ ॥ आ न न अव न ॥ उं वजि नी वज पा न ह न प नि ना हा प य मि ॥ काल य २ उं व
सु म हा ना प म रू रू ॥ वा ली क नृ न म यै वज न द्वा कृ न ग ना हि नै वि नै प य म ग न
(ग) य य नृ ॥ प य नृ न प य मि ॥ उं कृं कृं यै पू म म म थ न न क प २ ऊ ह य २ सर्व का

७१

मप्रसाधय २ रू रू रू रू रू स्वाहा ॥ हृज प प्रलिरव्यदयं द्वि हृजं कृत् म सं निरु पा म कृ ग ह
कृं च का मा लू ट हि ष सं ग ज म द द या न क न ज ख ला कृं कृ म वि द ह य ल कृ कृ ना सि ॥ उं
सि न सि कृं रू दि कृं ना लो उ म ड न ना माला म कु म व द्य न क ह य स सं व द्य की प्र नृ प क
पा न ग रू ट न प्र कि ष घृ न म धू प्र नि ग न म द न न व ह यि ला न क ह य न च गि म कृ न नि
ख न दाम पा द ना कृ म कृ य नृ ॥ पं च विं ग मि स ह य न प्र न ऊ ह व नी ॥ उं आ क य २ भा
ह य २ नृ नृ की भ व गी कृ नृ स्वा हा ॥ उ द न कि नै उ नृ नृ कृ ला कृ ना मि का न का ली व
नि कृ ला ॥ हि मं श्रु खान पा न द या द गी ह व मि ॥ उं आ क प श्री स म न स प की क्षो ना कृ द

五

[illegible]

म्यांगकुडुविषं स्वाहा ॥ सूर्यवृश्चिककर्कटादिविषं नांगयमि ॥ उं वा मूलश्रुतिर्ग३पनाजि
 गकि२नजस्वाहा ॥ सकाहि मक्तिगलस्रकंचउकिमूलं७कीकृत्सृष्टहृत्पापयग ॥ कलहं ह
 वग ॥ धनु२ष्यमध्यहृ३उकं स्रगंधि२ष्यमध्यप्रक्षिप्यघातमाधनगिनस्रनैहवमि ॥
 कोजिकनस्रनमा३४ ॥ कर्कनीगर्हगर्वातयाधूपिर्गैमधूपिचुतव्यनेशामिधनचिप
 हनमिश्रवसव्यनमा३४ ॥ काकहृदयश्रुतिनेमश्रुपकुमस्रकन्यालिलिह्यामकुंयस्र
 विष्टायप्रक्षिप्यनकाकेनखादको ॥ उं काककहनि कुर्द्धनीदवदरुकाकेनहृजापय
 स्वाहा ॥ हमाकारैगर्हहृत्वासुविष्टावृश्चिकपथिकाश्रुमां प्रक्षिप्य ॥ अभयं न ॥ नसा माग

मकथनः॥ मृदिनी नहावी मां निलनेल प्रकुमलिनाना नृहा एवमाहं वनिमुंति ननमाऊः
 विलालिगर्गगर्गना नी गहं स्यादासांधुपाहिनी चिप्रनदम्भना॥ माऊ कधूपनभाऊ
 इह कपाल एव दहन मृदु हनिना नवरुधरा वयि साहसं उका कर्षयच्चिप्रं नदम्भना ह
 रुप्रका नभाभाऊ मृगर्गगर्गयाधुपायाचिप्रं प्रसादयामि॥ मृमृमृपाभाऊ सर्वयम
 लेनचक्रन उरनाह वगभ सप्यदम्भनादिपनिना न्नाग्ने गंधक वं उदनासूनकलीनि॥
 मृदिनी सवालकला मृदु वगभ हिवादी नऊयित्वा कडलिपयमभाऊ नदंभा मृदुना
 मनदधनं मृही मृली पुठनहृदयाने निडाहवमि कामाचि मूलंगि रया सां वदनिनिजि

पशु॥ उकं स्वस्थान स्थापयन्॥ उंऊ मृनिर्लीहनि माहनि सर्वउष्ट्रप्रगमनि स्थाहा॥ वीनी नष
 हवमि॥ नमः उमहाका गय रुत्तर चत्तर निष्टर वेधर माह र हनर मृमृनं रीरुद्र प्रथा
 दिकं पतिऊपदानाहामयमि॥ उं नभा नल प्रयाय॥ उंटर हविस्तन स्थाहा॥ कनकी पञ्चवि
 नी कया सर्वनागिनगधकि॥ मृमृकनदी नारवपी चत्तर महा नारव नरु नाना विहृदनि
 गदिन मनुऊ कपनला विंगमी नमः॥ मृथ हगवानाह॥ उं चत्तर महा नाष स सर्वना
 यादग क सर्वमायादग क सर्वमायानिदग यनिर्विप्र रीरुद्र॥ मृमृनमनु वचत्तर महा
 नाष स स्था सर्वकुर्यात्॥ उं उं वनजी नम कपनं मऊयित्वा नि नंध सनेलं सऊल स

क. नं

पिष्टारुल्लिख्यविषवर्हि कांका नयन उदक नदि पकाल नाज निहिनै ॥ नाथो वनक
यस्तु नख सुदय निष्टय रीका न सविष्ट कान्द गय मि ॥ नमजल का च सुसमि न ना
जा नैजिग वरिहा ल ना म प्रिय नं दृष्टान नम हव मि ॥ घन न क सुवजन प्रक लाल
नजा ॥ हला हल सप सलौ ल क द य न ॥ नम प्रक गिरा या व न उडि ना व न रु य न
नै च सु माष क च सुष्ट यं धु न पं चा ग प्रष्ट कं ना स न कं अहिः सहि न ला जा न कि ग व
न व द्या दी प काल ना स वे न स कि कं दृष्टा पूर्व च दाल न जा ॥ गिरा नं या मूल व ह न च य
निडा हव मि ॥ ना ग द न न क मूलै शान प्र ष्य मूलै ह नि डा न मूलै च पिष्टा द र्श ना द द क

१४

पनिजा या ज य ॥ गल ली मूलै हिं गु ली का ख न या लू ष पा न नं को गु हं न दि न या द या न
मूल न वा विल च नं हव मि ॥ सहि जी न म क वी जं प्र न च र्हु गु ठ न ह ज य न ॥ न कं प न मि
कुं द ना च सु न या न क स मा सा ह ज य न ॥ आ हा न क ना मि च न न न प्र जा न न न स्या
सां दा न नं मा ज ॥ क र की मूल गि न सि वे ध य न ॥ ख र्क न मूल ह क माल मूलै प्र षा प्र ष
न ज यं स्या ट य उ ड न दि क स्था न ॥ मू क गिरा ह ला य ना नं च कि चि सि ह्या पि च न
ग क्रा धा नं न हव मि ॥ ग क वी जं प्र सु पा इ का द यं ह नि स च र्म स क र्पा क्क न न म ज मि ॥ उ
ष सी च च यि ला जि हा न ल स्था प य न ॥ ह क गालं चो द ना न द ह मि ॥ ह न क जा न प्र न ह

क. १

हिमयुधानाकहयनने ॥ २ ॥ नसुनप्रसाभूलीप्रवृत्तगवाद्युनहवगिनमादी
वन्धयेत् कागुह्यचोनहयंवानायकि ॥ ३ ॥ वगभउलवगभलाचमपाइकामानुधदि
उलगमनागननेरुवमिसर्वपरुलनसुहनेसुदिवससुधयामधिकासुन ॥ ४ ॥ मुकु
गिखाह्लावामपासिनागुकीयाहमनह्लावयय ॥ ५ ॥ नकाहवकीमालामकुसकाययि
सुनकेनलवयिउंनडकसिधनननासुनाह्लावकं ॥ ६ ॥ नदहिसानननैलकंनहमा
नावकिनेह्लावकपालकद्वभयनमासादिनकनसचननइपलेपनादिनननह
लाप्रनप्रननकावलियकायापनिनमहूलेमुखेकिह्लावकालकैलावयय ॥ ७ ॥ माहला

७३

हवमिपिलाहवसिधननाकर्त्तनं ॥ ८ ॥ नदंषिसाहंसार्चसकयामासासाईदयंचउष्टयं
वपश्च ॥ ९ ॥ अयायामासानविवत्तहमासने ॥ १० ॥ नाममा ३ गीनुषमा ३ निसुवसीमामिनक
पान ॥ ११ ॥ नाचनानककासासाध्मनिमालिरव नप्रवर्गनामविदहिनेगन्धदकेधिकं
दिगीयकपालनसुप्रटिकल्पमृनकसुप्रसवेष्टगिषकनवधाऊपुचिक्वमात्रमाप
यननाशोयाली ॥ १२ ॥ थकोनविलीयन ॥ १३ ॥ सुनकन्यानप्यानयमिनिउंशाकध २ भाहय २ म्
कंमाकर्षयऊखाहा ॥ १४ ॥ कपि ॥ १५ ॥ ननुर्हृह्लावमाहिष्यदध्लाहावयत्तफवानानुह्यनली
हृनकंनकृधकंकिचिप्रकिण्ण ॥ १६ ॥ ननमाधनदधिहवमि ॥ १७ ॥ कपि ॥ १८ ॥ नपिलानमनहा

क. ४

सुलपयननउग्रंयापयलनहिमदधिरुवमि॥ अथकायमउग्रमात्रमिर्नपापय
नदधिधैर्यमघटंरंजयन्॥ दधियमाहवनि॥ अकजीनननवघटंविहावावकुधन
उडिनीकुलंनकुमिवदृग्धका॥ अथयमपसुनदगदिननहृयापृहीलापृष्टिदयना॥
दधिन्यासुनकुलप्रविगन॥ नमउर्ध्वगमलेखयाउदकल्लहः॥ अथ॥ अथहृहाल
खयाप्रनयनिनविदिनसाली॥ अथलनपापामार्गमूलमूलायपृथनप्रडिगदध्म॥
कटिधनिगोमुधम॥ ब्रह्मवानवीजदानाप्रडिगयनकयनकुलप्रकुपान्नपमनि
ननेवल्लिफक्तप्रशक्तिकानाहनाकुलनमकुमिल्लनिलमाखयागयाधममविनादि

७७

नंरुत्तामनपलिप्यननदानीकुलमि॥ नाप्रहाजनलवननश्रामलकंपरुगिल्लाभाहृहा
ऊनलपननप्रमिवहवदृग्धका॥ सफगमहकगंधगिनाचमुदानाहालमिगिखा
सुउकविजापनिलघृष्ट्यादिसंख्यापकुलधनाउत्सर्गमि॥ कृषीवाकृनिवनकका
टल्लनप्रडिप्यनाकागमकुमिमुमकिमुक्कमल्लहलागकेनेलनविहविमंजुल
हंवल्लमि॥ ॥ ॥ अथकनवीनाखयीचउमहानोषमनकुक्रुयहलपटलउकविं
गमिगमः॥ ॥ अथहगवानोहा॥ हृदिप्रा॥ अथदृष्टा॥ सुमानानाहिदगक॥ उ
दानकृष्टदगउद्यान॥ सर्वगनीनग॥ ॥ अथमध्यप्रधनायप्रा॥ अथहृदिहिरु॥

क. गं

अस्य अस्य हृदय नजी च न सर्व ऊर्ध्व ना वा उ ग संक्रान्तिया गन प्रत्य की द उ म के क
च उ म ल वा ह न वा यु न ग म वा उ ग द कि न स स वा ह न व कि म उ ल म च न वा
म स स वा ह न वा यु म उ ल म च न वा म द कि म स स ग हि व ल्हा ह न म ली व द म
व र्च च म न्द वा न न म उ ली ह व न ल ल ना वा म न दि स्या द ग ना स च व हि मा श्र
व धु गी म ध्व द ग हि स ह ज्ञा ना न्द ऊ र्ध्व व ह न प्र व ग हि व ल्हा हि ४ हि मि नि श्र
ल ह प न वि ना स्या मि स न वा यो या व क्री व प्र व र्च न ४ प्र वि ग क म का ह य ४ प्र
न क र्ण स धा न म ग नि ग मा द व का ह या नि श्र ना र्ण म का म न ४ व लु ना य म स

११

मा ध्य संप्र हं न दा न ह न प्र वि ग कं ग म य द्वा प्र स ह्ना दि ग र्वा या सि ध्वा क न न ऊ र्ध्व
व वृ द्वा ना थ व वा य था वा प्र म धा ग म य य लु प्र ह्ना म लिं ग्घ नि र्ह नं न य ऊ मा य म च उ नो
प म र्चि न दि व ह्ना न स मा य क पं च हि ह्ना हि जा य न व लु ना य म स मा धि ल्हा स क्री
ना लिं ग नि र्ह नो हृ द य च हृ द यं गृ ह्ना गृ ह्ना गृ ह्ना न सं प्र नो हृ द न च हृ द न्ना नि ल्हा
स हृ द न न ४ हृ द या क ग न य न्द स स र्प कु प्र ह्ना ब य न न क र्ण व ल न व स र्व
हृ नि र्ह व न न ४ स म वा ह न मा य म ल्हा व वि ष्य व र्च नो प न वि लु च जा ना मि स न
म व न द दा ना म हं न थ न न व या ग न क र्ण म ध्व वि ल्हा व य न गृ ह्ना न स र्व द व ल्हा

क. नं

दसंनिहितं यथा ॥ न तथा न प्रहावयित्वा ॥ अला सं च स पंथनि ॥ नालाया ॥ न तथा ॥
लाजनिगं सर्वगंधिका ॥ जिह्वाया च न तथा ॥ लाडना ला देवपयमा ॥ खलिंगा ॥ गनका
॥ लाजानी ॥ न सर्वपंथनी ॥ गिनामध ॥ न तथा ॥ ला सर्वसामर्थवर्द्धनी ॥ यत्र यत्र हि
गैविदे वायनां समनगीकृती ॥ निरुद्धे मय मयैव प्रनिविष्टा ॥ साकिकं पोष्टिकं व
ग्धमाकृष्टिमान्नकथा ॥ उद्यानने सर्ववैरावप्रसिद्धानि ॥ कृष्णादिकप्रथा ॥ गचउ
दृष्टिनियाऊय ॥ वामालोकिनिदृष्टिकं कं नवगीकृती ॥ दक्षिणकर्षमिहयाप्र
नकं ननियोजिमा ॥ ललागला पुयादृष्टिमानसिदवकं नस ॥ नाग्रहिमादृष्टिसेर

यद

नीलं रुकनहिकृकहिपनाप्रयत्नहीवउचप्रनक ॥ नवकसनसीवउकृकृक ॥ संवल
ह ॥ चिकि नवाहिधर्मासु पूर्वदृष्टिनियाजिन ॥ सर्वसामर्थप्रकृष्टसिध्दमचिद
नाधमा ॥ चिदसनाधनादायावा ॥ धवाया ॥ यनाधना ॥ चिदस्यापिहवडाध ॥ न्याय
गनिवसिद ॥ प्रहापायकथा ॥ गनवउपमसमागम ॥ निरुद्धाहिसुखरुजीनसिध्दमि
लाचप्रह ॥ वउसुखादयावृक्षाः ॥ तदावाकृष्टमकिन ॥ किंप्रन ॥ लोकिकावृक्षानलाय
मागं गवालकापमा ॥ पुलाहविष्यकिमहर्षया ॥ वर्डमालावैवृक्षावृक्षहानलम
चिना ॥ नलायोगमदानि ॥ चिन्तयंदवलप्रह ॥ मचलहिजीनजानां ननललहनि

क. गी

हृन् नहि कनविहिदिः कइ मात्तपिलत्त नः ॥ ६० ॥ कनकी नखकी चउ नहाभा
पतनकु वायु प्रयाग इविग निमम ॥ ६१ ॥ अथ हगयामाहा ॥ पादनालका विज्ञाना
हिवधा प्रि नायम नृत्त स्यात् ॥ पादनालकी विधा चक्रवधाल सययन ॥ पादनालू वि
धानासिका वधनमा सययन कटिवसावका ले सह नृत्ति कया ववर्ष नापि इ मर्दि मध
नयं ववर्ष न किहा यादग नायव त्वने कर्म्म मा वध च उर्मा ले ॥ ६२ ॥ वधादिने कनह
नन सनध मृक वाह शिर कय मा सन सनं सर्व कनिष्ठा वधाला सना समहत्क ॥ ६३ ॥
धा पड मा प्रय न सननाल का प्रय वधा दिदिने मसु नगे ॥ कथु या घ ॥ नादा न डिमा

१५

मासे ॥ कथु मूल समधमकार यप्र एथ कएथ कवधा विदिने कन पादां गुष्ठमान त्वनाहि
पर्य कवधा घमा सन नासाय मान्ता गो विला नृत्त फ नायम कपाल मा सक्त दा त्व ॥ मासः
चक्र सन्द नादग नाय ॥ मासे ॥ नासिका वडात्त फदिने ॥ हृदय निम्ना त्व ऊस ॥ किहाम
ध ककल खयादि नायम नख नक नादग नाय ॥ मासे ॥ दक लोभा घमा सन मृत्
न्ध मृदग मा घमा से ॥ गना दो का प्रपि पर्यया सात्त व प्रक्ति उदग ना त्व ऊन नह ॥ का
न सगी नादग ना ॥ हूला न स उ म्भ त्व दग नह ॥ अनामिका मूल ककल खयादग न ना ॥
दगदिन न ॥ दहा प मा दन क्ख त्व र्वादिगी ना नदग नह ॥ आन मा प्र सहा द लोभा न

क. ग.

दिमासनमप्रदुग्गदिहि नाप्रमप्ररुथादिनेकनवामावर्द्धम्यापमासन नाहवि
पर्यायासयमहननाभयादगनासयमासननशगुलीउनधानिनदगनालगमदि
नेशकसधनाशकवर्षपननृषिपमिविन्नादगनासयम ॥ ७ ॥ एवंहात्मानदधनंयनलो
कंवचिकयग ॥ ८ ॥ कनवीनाखीवन्महाभोषमनकुनृक्षलकथपटलकु
थविगमिमम ॥ ९ ॥ अथहगवानाह मायिष्टसमायोगपंचहनासकगगीप
चहनासकसूर्यादयामिननयोगम ॥ १० ॥ आयननप्रवेसस्वप्रहापायालकप्रन ॥ ११ ॥
स्त्रिवज्जहवचवात्तुर्थात्तासस्तकव ॥ १२ ॥ आत्तुर्नाहवेदह ॥ १३ ॥ सत्त्वानाक्रमनिर्मि

१०

मायापमस्वरूपायंगंधर्वनगनापम ॥ १४ ॥ अथपसमश्रपजलचक्षीपमामम ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ कनवीनाखीवन्महाभोषमनकुनृक्षलकथपटलकुथविगमिमम ॥ १७ ॥ अथ
हगवमीआह ॥ १८ ॥ अथगतने ॥ १९ ॥ कुमिकापिप्रहापानमिमादय ॥ २० ॥ पमादकूलमनाथसे
किफंनमिविलुने ॥ २१ ॥ अथहगवानाह ॥ २२ ॥ अथगसंपवक्षामिप्रहापानमिमादय ॥ २३ ॥ सुलप
र्यकत्तददीवाउगदयसमि ॥ २४ ॥ नीलवर्त्ममहालगम ॥ २५ ॥ अथनचमुद्रितं ॥ २६ ॥ नकपशाय
गासुवनिलयावामहक ॥ २७ ॥ हिनीर्वकनसापुंउपप्रवक्षीपनिहिने ॥ २८ ॥ यीनाननरुचा
दृष्टाविगमलाकीषियवदा ॥ २९ ॥ सहजानन्दसमाधिरुदवीमज्जाकुविहावयग ॥ ३० ॥ कंकान

हानसैहगाविश्ववकीकुयागिनी॥ एवयमक्राठनायागीकुवंसिद्धिमवाप्सुमै॥ अथन
 एवयमकुनीवाभीधिकालसैहवा॥ मुदिनांसाधुसुनेवपीमावऊधनयनी॥ नलभू
 डीमावकीनकाकाकुरुकुलिना॥ अमिमाहमुदिनीदवीक्रींकागहनसहवा॥ ना
 नाम्नासामवर्हिवशाकानहानसैहवा॥ अमायमुदिनाध्यायात्सर्वत्रयनमानव॥ स
 त्ववर्षाकसर्वर्हिसोमनृपनसंहिम॥ त्वज्जवागधन४ श्रीमानालिगहिनयकुमि
 खकलिपनकलिमाधकनागृष्यप्रहावयम्॥ अनेनसिध्यागिमृदयानेवर्तगय४ अ
 थवाप्रकृतिरुत्वासाधयल्लादिगृही॥ सहजवन्द्यमाधिल्लाऊपदकाप्रमानस४

नयायंऊपमकु४॥ अंविश्ववज्जगच्छ२रुंस्वाहा॥ उंवज्जसुनस्वमिश्रागच्छ२धीस्वाहा उंव
 ऊधशुशुनीआगच्छ२वस्वाहा॥ उंकुरुकुरुआगच्छ२क्रींस्वाहा॥ उंकागनआगच्छ२प्रींस्वाहा
 अथागसंपवच्छामि॥ कनवीनकुमंतली॥ चतुनयचतुर्दनीचतुक्तावनमसिमपीनवर्ह
 कुकर्तुर्वैमध्यपमचतुर्दनी॥ तस्यालोदलं॥ अर्धंभोनिस्तनकसंनिहं॥ वायुवपीनवर्ह
 कुसाममीग्ननकांनक॥ मध्यवेककुरुवर्हकुमजाचलंपकलयन्॥ सूर्यलुवाथवा॥ अ
 नपीनम्बानकमेववा॥ सामंवापंवहिरुर्द्वैयकनृपैलावयम्॥ नाचनाममिका॥ एव
 आ॥ अकवेधनमी॥ वामदक्षिणकसागीवेगनचन्द्रकनप्रला॥ भोनिस्तपातुलादवी

क. नं

धनुर्वीसधनापना ४ नकावाश्वका (सुभा मकी पीन संनिहा) घटधामगिस्सहकसा
मापीसानका नका नानीवनदा सर्वामनीलासलधननी ॥ ७ ॥ नाचडासना ४ सर्वा ४
श्रद्धपर्वकलिका ॥ मागवजिनसंपूर्वदानगककमासन ॥ अरुखपनधनानका ४ वव
जिनुदजि (६४) कर्हि नर्जनीधनानागमनकपुन्रुषना ॥ पश्चिममानवजातुवर्धवज
धनाकली ॥ मश्रुनपिचुवजातुवधकासामसंनिहा ॥ ३ ॥ नभाहवजातुनकसा (१)
कधननी ॥ पीनवर्धकुवनरुनसत्सयानालमं प्रसालीरुपदासेवा कूडाश्रुकमू
मा ॥ चत्वात्राहकयम् ४ कालेकईवा ४ पीनसंनिहा ॥ अस्मत्तवनमाश्रययोगिनस

१२

मन्विग ४ ॥ ऐलजिह्मिकीभासहर्षपनमधन ॥ अथमसंपवकामिचधुनापमहा
वनाविधपमादनेदवकलयच्चउनापसे ॥ वामदवहवद (मोनकवर्धकुनी) ॥
पीनकामदवकुसाममापकुनामकी ॥ वायव्यककवर्धकुकापिलसनसंहकं कर्हि
खपनकनागधमसलिकालीरुपादन ४ ॥ हगवनिपश्चिमादवीहिकावेवर्धगवली
श्रुसेवध्यानधारगनसंदव्यमयादिप्रकयन् वधयसर्वदवानकिंप्रन (भनयानना
न ॥ नशायमकुम ॥ ॐ वज्रमहाभापसवेध २ श्रुकीरुद्र ॥ पिनयाप्रहृष्टकैवाम
य (४) नैपममानिलवेवधुनापकुनक्याकृक्याथवा ॥ सिधकनगुऊनेदवयागी

क.गं

लवनापनिनिष्ठिन ॥ उवं श्वनाचलादीश्वरावयनगमरुयलन ॥ विऊनापिविमाध्याया
 दकचिह्नं समाहिनी ॥ पिवनगुऊनस्वयननिष्ठिनगच्छनचक्रमन्त्रपिसर्वावहानिना
 यागिलावयदवनाकृति ॥ अथवाकवलंसोखयागिनीवचनेदिन ॥ नावद्विहावयमरु
 यावद्विहाननावऊन ॥ गनप्रवहूनयागीमहाभूतसहिष्ठादि ॥ ॥ ॐ स्वकनवीनाख
 श्रीवचनमहाभाषमऊदवनासाधनपरलपैवर्षिगमिन्मभः ॥ ॥ ॐ दमवाचहग
 वानाश्रीवऊसखरुचयागिनीगमाहगवनाहविनमस्तनन्दनिष्ठि ॥ ॥ ॐ मिश्रीवीड
 महाभाषननंपनिस्तमाफी ॥ यधर्माहउपहावाधुनवीनथगनध्वदऊनी

72

क. १

चयानिनाधुर्वेवादिमहाप्रवर्गं ॥ ७८ ॥ अथासुखीवनं ॥ मिनिआखा
ठकृष्णपञ्चचतुर्दशीबुद्धवानथस्वर्गयादीनसर्पेष्टया नाकल लखकप्रलम्ब
यानलजानिगृह्यकल दानपनिहा रुचीनगृह्यकया नचायावियाकल थृष्ट
म्हदानपनिया कल्याणकयमालउर्ह थस्तुस्तुनानीलाहयायमइलाहयागसा
शर्वेउमहाप्रवर्गयाकृष्टिइयमा मयानतासकलया कल्याणकयमालउर्ह

98

सुभाषचंद्र बोस

2745

I

ASHA ARCHIVES



आशा भट्टकवि

2745

I

ASHA ARCHIVES